मासिक, विशेषांक 2020
वर्ष 8, अंक 10 ₹ 50

फेम इंडिया

सोच बदलें, समाज बदलेगा

25 श्रेष्ठ सांसद

एशिया पोस्ट - फेम इंडिया सर्वे

Shambhu's Foundation

(To creat Endless Happiness)

H—O—N—O—R—A—B

Address -
F Block - sector -50 , Noida -201304
(Delhi NCR)

Contact - +91-9911976808
Email ID - ss.fameindia@gmail.com
Website- www.shambhusfoundation.in

फेम इंडिया
www.fameindia.co
वर्ष 8, अंक 10, विशेषांक 2020

मैनेजिंग डायरेक्टर / एडिटर इन चीफ - राज श्री
चीफ एक्जीक्यूटिव डायरेक्टर - उमाशंकर सोंथालिया
चीफ ऑपरेटिंग ऑफिसर - शंकर सोंथालिया
मैनेजिंग एडिटर / एक्जीक्यूटिव डॉयरेक्टर - श्वेता श्री
रेजिडेंट एडिटर - धीरज कुमार

आर्ट डायरेक्टर - स्वर्ण लता

एडिटोरियल टीम -
प्रियका श्रीवास्तव
शत्रुघ्न प्रसाद
श्वेता रश्मि
आनंद वर्मा
हेमंत सिंह
मिथिलेश पाठक
अंजू राजपूत
मनजीत सिंह
नंदन झा
पंकज चौधरी

सेल्स - नीतू चौधरी
मार्केटिंग - पंकज तिवारी
सर्कुलेशन - प्रवीण मिश्रा
वेब टीम - रश्मि सिंह
फोटो रिसर्चर - राजेश वर्मा
लीगल एडवाइजर - शरद चंद्र झा

(स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक राजश्री द्वारा ज्योति प्रिंटर्स, ई-94, सेक्टर 6, नोएडा, गौतमबुद्ध नगर से मुद्रित एवं ए-533, जीडी कालोनी, मयूर विहार फेज-3, दिल्ली से प्रकाशित, संपादक - राज श्री)

संपादकीय एवं मार्केटिंग ऑफिस
फेम इंडिया पब्लिकेशन प्रा.लि।
762,ब्लाक-एफ 8, सेक्टर-50, नोएडा 201304 (उ.प्र.)
फोन नं. - +91-7004450124
ई मेल: info@fameindia.co

RNI No. DELHIN/2012/48773

संपादकीय

सदन की गरिमा कायम करते श्रेष्ठ सांसद

भारतीय संविधान की आत्मा संसदीय लोकतंत्र में निहित है। संसद सर्वोच्च है और कार्यपालिका व न्यायपालिका दोनों ही संसद के प्रति प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष तौर पर जिम्मेदार होते हैं। संसद का काम कानून बनाना तो है ही, यह दायित्व भी है कि वह कार्यपालिका को उस कानून को अमल में लाने के लिये जवाबदेह बनाये। न्यायपालिका के सभी फैसले भी संसद की समीक्षा के अधीन हैं और किसी विवाद की स्थिति में संसद को कानून बदलने का भी अधिकार है। ऐसे में यह आवश्यक हो जाता है कि सांसदों का व्यवहार जिम्मेदारी भरा हो। हाल के वर्षों में देखने में आया कि संसद का संस्थागत स्वरूप कई कारणों से प्रभावित हुआ। कई सांसदों और राजनीतिक पार्टियों का गैर जिम्मेदार रवैया इसके लिये उत्तरदायी रहे। देश के आवश्यक मुद्दों पर बहस करने के लिये खर्च होने वाला समय शोर-शराबे, और हंगामे में खर्च हो जाता था। ऐसी स्थिति बन गयी थी कि जिन मुद्दों पर संसद में बहस होनी चाहिये, उन पर कोई चर्चा भी नहीं होती थी। 17वीं लोकसभा में ये हालात थोड़े बेहतर हुए, कई महत्वपूर्ण बिल भी पास हुए। परंतु ये आवश्यक है कि सांसदों के सामने आदर्श स्थापित किये जायें। इसी क्रम में उन सांसदों की चर्चा अवश्य होनी चाहिये जिन्होंने संसदीय मूल्यों और लोकतांत्रिक परंपराओं का सम्मान करते हैं व निजी एजेंडे की बजाय राष्ट्रीय एजेंडे पर ध्यान देते हैं।

मीडिया की जिम्मेदारी है कि समाज के हर वर्ग को सही दिशा दिखाये और उन सांसदों को प्रोत्साहित करे जो राष्ट्र हित की दिशा में कार्य कर रहे हों। गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी हमने बेहतर कार्य कर रहे जन प्रतिनिधियों को प्रोत्साहित करने के लिये उनकी मौजूदा खूबियों को इंगित करने के लिये एक व्यापक सर्वे किया है। इस सर्वे में उन सांसदों के कार्यों का सकारात्मक विश्लेषण किया गया है। विगत वर्षों की भांति इस बार भी इस प्रक्रिया में सांसदों के आचार-विचार व व्यवहार और सदन एंव जनता के प्रति जिम्मेदारी को प्रमुखता दी गयी है। श्रेष्ठता को सम्मानित करना एक पुरानी परंपरा रही है और जनता देश के सभी सांसदों को श्रेष्ठ सांसद के तौर पर देखना चाहती है ताकि संसदीय लोकतंत्र को एक सकारात्मक आयाम दिया जा सके और एक बेहतर समाज का निर्माण संभव हो।

सोच बदलें,समाज बदलेगा
राज श्री

राजश्री

info@fameindia.co

श्रेष्ठ सांसद

06 डॉ किरिट भाई सोलंकी
सहज सुलभ सांसद है

18 जनार्दन सिग्रीवाल
हर किसी से जुड़ने की कला में माहिर है लोकप्रिय सांसद

20 शिवकुमार उदासी
सुनहरे भविष्य का विजन रखने वाले आदर्श सांसद हैं

26 विरेंद्र सिंह मस्त
पक्के इरादे वाली शख्सियत हैं सांसद

32 मीनाक्षी लेखी
नारी शक्ति की मजबूत मिशाल कायम करने में सफल रही हैं

38 पूनमबेन माडम
संसदीय क्षेत्र के विकास के लिए जागरूक रहती है

44 अजय निषाद
अपनी कर्त्तव्यनिष्ठा से क्षेत्र में मजबूत उपस्थिति दर्ज करवाते सांसद

48 रामस्वरूप शर्मा
जन सरोकार के मुद्दों पर लगातार प्रयासरत रहते हैं

52 देवजी पटेल
बुलंद इरादों के कर्मयोगी हैं जालोर के सांसद

श्रेष्ठता को सम्मान - एक समाजिक परंपरा

इंडेक्स

संसद के भव्य गरिमामय सेंट्रल हॉल में जब जनप्रतिनिधि के तौर पर सांसद अपने पद और गोपनीयता की शपथ लेने के लिये कदम रखते हैं तब जाकर उन्हें अहसास होता है कि पूरा देश उनके कदमों को किस उम्मीद से टकटकी लगाये देख रहा है। संसद भारत के लोकतंत्र का सबसे अहम स्थान है। संविधान में संसद को सर्वोच्च स्थान दिया गया है। यही वो जगह है जहां देश का भविष्य तय होता है। जनता के ये प्रतिनिधि सदस्य ही तय करते हैं कि देश के लिये किन-किन नियमों की आवश्यकता होती है। सरकार के ज्यादातर मंत्री भी इन्हीं सासदों में से चुने जाते हैं। देश की अर्थव्यवस्था कैसे और किस रफ्तार से चलेगी, देश में किसको क्या हक मिलेगा, किस राज्य को कितनी मदद मिलनी है, किस मद पर क्या खर्च होगा ये सब बेशक सरकार तय करती है, लेकिन उन्हें आखिरी मंजूरी सांसद ही देते हैं। स्वस्थ्य संसदीय लोकतंत्र के लिये सांसदों को सक्रिय व इमानदारी से अपने दायित्व का निर्वहन करना आवश्यक होता है। सांसद वह मजबूत कड़ी है जो क्षेत्र के विकास कार्यों के लिये केंद्र और राज्य को आपस में जोड़े रखता है। अपने क्षेत्र के विकास के लिये केंद्र की योजनाओं को क्रियान्वित करवाना हो या फिर सांसद निधि से विकास कार्य करवाना, सांसद का रोल खासा महत्त्वपूर्ण होता है। फेम इंडिया ने हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी देश के श्रेष्ठ सांसदों को चुनने और उन्हें पुरस्कृत करने का बीड़ा उठाया है और इस कार्य में सहयोग लिया है विश्व की चर्चित सर्वे एजेंसी एशिया पोस्ट से। हमने इस सर्वेक्षण में सांसदों का जनता से जुड़ाव, प्रभाव, छवि, पहचान, कार्यशैली, सदन में उपस्थिति, बहस में हिस्सा, प्राइवेट बिल, सदन में प्रश्न, सांसद निधि का उपयोग व सामाजिक सहभागिता को मुख्य मापदंड बनाया। 25 विभिन्न श्रेणियों के लिये देश के 545 सांसदों में से सबसे योग्य उम्मीदवार खोजना खासा मुश्किल कार्य था। सर्वे सीधे जनता से, ऑनलाइन व विशिष्ट व्यक्तियों से स्टेक होल्ड विधि से पूछे गये सवालों और लोकसभा की साइट पर उपलब्ध प्रमुख डाटा यानी कुल दस बिंदुओं पर आधारित है।

प्रमुख स्थान प्राप्त करने के लिये टीम फेम इंडिया की बधाई और शुभकामनाएं

आशंकर

ceo@fameindia.co

प्रभावशाली

FAME INDIA

सहज सुलभ सांसद हैं

डॉ किरीट भाई सोलंकी

फेम इंडिया मैगज़ीन- एशिया पोस्ट श्रेष्ठ सांसद सर्वे

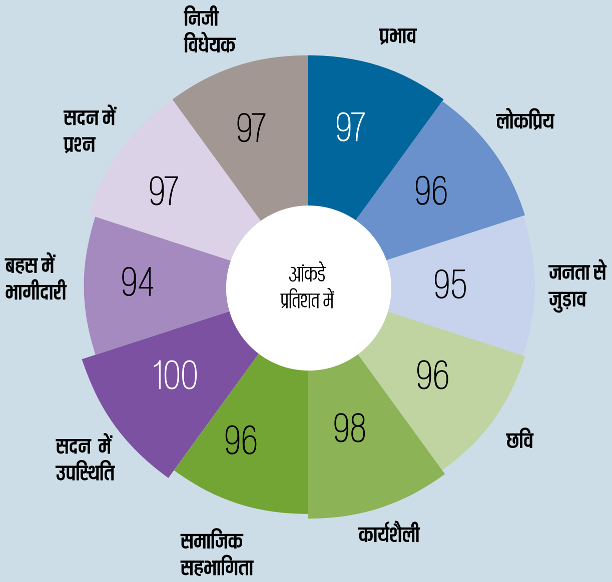

सर्वे स्रोत : विभिन्न प्रश्नों पर संसदीय क्षेत्रों की राय , विधायिका और मीडिया से जुड़े लोगों से स्टेक होल्ड सर्वे और लोकसभा से उपलब्ध डाटा के आधार पर

प्रभावशाली

विशेषता -

- साफ छवि के शालिन राजनेता
- एससी-एसटी वर्ग के कल्याण के लिए लगातार प्रयासरत
- चिकित्सा के क्षेत्र में बेहतर कार्य के लिए बी सी राय अवार्ड से सम्मानित

डॉक्टर किरीट प्रेमजी भाई सोलंकी ऐसी शख्सियत हैं जिन्होंने अपने नाम के मुताबिक ही हर क्षेत्र में मानों ऐसे ऊंचे पैमाने तय कर दिये हैं जो दूसरे सांसदों को वहां तक पहुंचने की चुनौती दे रहे हों। चाहे संसदीय परंपरा के निर्वहन की बात हो, या फिर अपने लोकसभा क्षेत्र तक विकास कार्यों का प्रवाह ले जाना, वे हर मामले में अव्वल रहते आये हैं।

फेम इंडिया - एशिया पोस्ट "श्रेष्ठ सांसद सर्वे" में व्यक्तित्व, छवि, जनता से जुड़ाव, कार्यशैली, लोकप्रियता, सदन में उपस्थिति, बहस में हिस्सा, प्राइवेट बिल, सदन में प्रश्न, सांसद निधि का उपयोग व सामाजिक सहभागिता आदि 10 मुख्य मापदंड पर किये गये सर्वे में **डॉ किरिट भाई सोलंकी**, प्रभावशाली कैटगरी में प्रमुख स्थान पर है।

गुजरात में पाटन जिले के कंबोई गांव में 17 जून 1950 को एक मध्यमवर्गीय परिवार में जन्मे किरीट भाई की शुरुआती पढ़ाई गुजरात में ही हुई और उन्होंने अहमदाबाद के विख्यात, सेंट जेवियर्स कॉलेज और एनएचएल मेडिकल कॉलेज से एमबीबीएस की डिग्री और एमएस डिग्री बीजे मेडिकल कोलेज (सिवल हॉस्पिटल) से हासिल की। अहमदाबाद ही नहीं, बल्कि पूरे गुजरात में लेप्रोस्कोपिक सर्जरी के क्षेत्र में उन्हें एक सम्मान हासिल है। वे गुजरात स्टेट सर्जन्स एसोशिएसन के अध्यक्ष भी रह चुके हैं। देश में हेल्थ सेक्टर का सबसे प्रतिष्ठित बी. सी. रॉय अवॉर्ड भी उन्हें मिल चुका है।

वर्ष 2009 के चुनाव में तत्कालीन मुख्यमंत्री और वर्तमान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने डॉ. किरीट सोलंकी को भाजपा ने सक्रिय राजनीति में उतरने का निमंत्रण दिया। डॉ. सोलंकी संघ और भाजपा की राष्ट्रवादी विचारधारा के समर्थक तो थे, लेकिन राजनिति से उनका दूर-दूर तक कोई संबंध नहीं था। एक डॉक्टर के तौर पर उनकी लोकप्रियता इतनी अधिक थी कि पार्टी को नवगठित अहमदाबाद पश्चिम के लिये वे सबसे उपयुक्त उम्मीदवार लगे। वर्ष 2009 में 15वीं लोकसभा के चुनाव के दौरान उनके क्षेत्र की जनता ने उन्हें अपने क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करने के लिये चुनकर भेजा। केंद्र में यूपीए सरकार होने के बावजूद उन्होंने विकास कार्यों की झड़ी लगा दी। क्षेत्र वासियों ने वर्ष 2014 के लोकसभा चुनाव में उन्हें दुबारा सांसद चुनकर संसद में भेजा। वर्ष 2019 में किरीट सोलंकी ने जीत का हैट्रिक लगाते हुए 17वीं लोकसभा में प्रवेश किया तो उनका प्रदर्शन और निखरा। उन्हें अनुसूचित जाति व जनजाति मामलों की इलेक्टेड कमेटि का अध्यक्ष और व्यापक प्रयोजन व वित्त मामलों की स्टैंडिंग कमेटियों का सदस्य बनाया गया है।

बतौर सांसद उन्होंने अपने क्षेत्र में विकास और कामयाबी की एक ऐसी मिसालें कायम की हैं जो उनके साथी सांसदों के लिये प्रेरक का कार्य कर रहे हैं। उन्होंने पाटण में कासा-भीलड़ी रेलवे लाइन के मार्ग में आ रही उस बड़ी समस्या को सुलझा लिया है जो पुरातत्व विभाग और रेलवे के बीच 566 वर्गमीटर जमीन के विवाद के कारण 1955 से उलझी हुई थी। इतना ही नहीं, उन्होंने अहमदाबाद में रेलवे की खाली पड़ी जमीन का मेट्रो के लिये उपयोग करवा कर शहर के सैंकड़ों घरों को उजड़ने से बचा लिया। सरखेज-गांधीनगर-चिचौड़ा के लिये बनने वाले नैशनल हाइवे 8 के नये रूप यानी एनएच-147 में शहर के व्यस्त हिस्सों में फ्लाइओवरों की मंजूरी दिलवाना भी उनकी एक अहम उपलब्धि रही। इससे अहमदाबाद नगर इस महत्त्वपूर्ण विकास पथ से बिना किसी तरह बाधित हुए जुड़ रहा है।

बतौर सांसद उन्होंने 17वीं लोकसभा के महज दो सत्रों में 46 बहसों में सक्रिय भागीदारी की जिनमें से 32 विशेष उल्लेख के विषय थे। उन्होंने स्वास्थ्य, पॉवर, रेलवे, कृषि, आदिवासी कल्याण आदि विषयों से संबंधित 73 प्रश्न पूछे। उन्होंने नेशनल मेडिकल कमीशन के गठन और ट्रांसजेंडर लोगों की सुरक्षा के लिये दो सरकारी विधेयक सदन में पेश किये हैं। इसके अलावे आदिवासियों, असंगत कानूनी पचड़ों मे फंसे लोगों, प्रतिपूरक वन क्षेत्रों और वन्य जीव संरक्षण में सुधार के लिये चार प्राइवेट बिल भी सदन के पटल पर रखा हैं।

उत्कृष्ट छवि के प्रसिद्ध सांसद

कोडिकुन्निल सुरेश

फेम इंडिया मैगज़ीन- एशिया पोस्ट श्रेष्ठ सांसद सर्वे

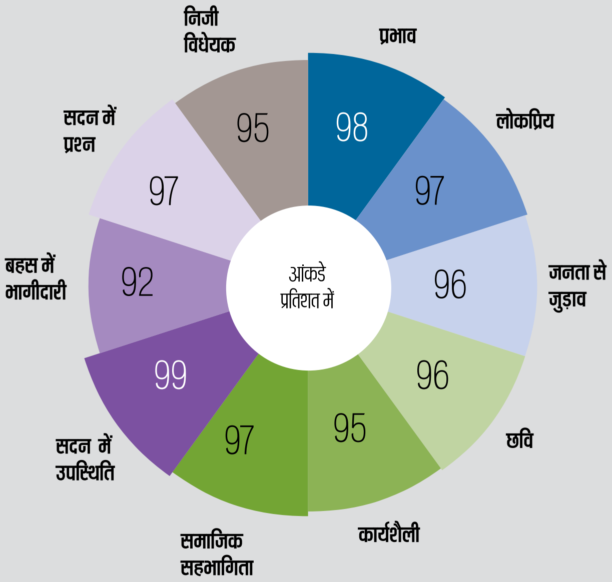

सर्वे स्रोत : विभिन्न प्रश्नों पर संसदीय क्षेत्रों की राय , विधायिका और मीडिया से जुड़े लोगों से स्टेक होल्ड सर्वे और लोकसभा से उपलब्ध डाटा के आधार पर

उत्कृष्ट

विशेषता -

- लंबा बेदाग राजनीतिक जीवन
- शालिनता और कुशलता का बेजोड़ मिश्रण
- कांग्रेस के शीर्ष नेताओं में प्रमुख

दक्षिण भारत के एक ऐसे करिश्माई राजनेता जिसे जनता ने सात बार चुनकर लोकसभा में भेजा हो, लेकिन उत्तर भारत में जिनकी बहुत चर्चा भी न हो। एक सौम्य और राजनीति के हर फन में माहिर राजनेता कोडिकुन्निल सुरेश अखिल भारतीय कांग्रेस समिति (एआईसीसी) के सचिव भी हैं।

कोडिकुन्निल सुरेश का जन्म 4 जून 1962 को एक गरीब परिवार में तिरुवनंतपुरम जिले के कोडिक्कुन्इल में हुआ था, उनके माता और पिता का नाम कुंजन और थैंकम्मा है। सुरेश उनकी सबसे छोटी संतान हैं। संघर्ष और कठिन हालात में उन्होंने स्नातक किया और केरला लॉ एकेडमी लॉ कॉलेज, तिरुवनंतपुरम से एलएलबी की परीक्षा पास की। कोडिकुन्निल सुरेश ने अपने राजनैतिक जीवन की शुरुआत 1989 में पहली बार कांग्रेस के टिकट पर 9वीं लोकसभा के लिये चुने जाने के साथ की थी। उसके बाद 1991 में 10वीं, 1996 में 11वीं, 1999 में 13वीं लोकसभा के चुनावों में वो अदूर सीट से चुने गये। 2004 में यह सीट गंवाने के बाद उन्होंने उन्होंने मावेलिक्कारा पर अपना ध्यान केंद्रित किया और वर्ष 2009 में 15वीं लोकसभा के लिये दोबारा चुने गये। सुरेश राहुल गांधी के काफी करीबी रहे हैं और मनमोहन सिंह की यूपीए-2 सरकार में श्रम मंत्रालय में मंत्री भी रहे। वर्ष 2014 और 2019 के आम चुनावों में देश भर में भाजपा की लहर होने के बावजूद उन्हें क्रमशः 16वीं व 17वीं लोकसभा के लिये जोरदार जीत हासिल हुई। केरल से आने के बावजूद ने अपनी मातृ भाषा मलयालम या अंग्रेजी में शपथ न लेकर हिन्दी में शपथ लेकर अपने सहयोगियों तक को आश्चर्यचकित कर दिया।

के. सुरेश सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियाँ में काफी सक्रिय हैं। आर्थिक रूप से पिछड़े समुदायों का कल्याण, पिछड़े वर्गों के लिए चिकित्सा शिविरों का आयोजन, बेरोजगार युवाओं के लिए नौकरी मेला का आयोजन और नेत्र शिविर आयोजित करना उनकी कुछ ऐसे कार्य हैं जिन्हें वे उपलब्धि भी नहीं मानते। खेल व फिटनेस के लिये उन्होंने युवा क्लब, स्पोर्ट्स क्लब और नाव क्लबों आदि की स्थापना की है जिसके माध्यम से नौका दौड़ का आयोजन हर वर्ष होता है। इसके अलावा पढ़ना और लोगों के बीच जाकर उनसे मिलना और काम करना भी उनके पसंदीदा कामों में शुमार है।

कोडिकुन्निल सुरेश कर्मचारी संघ व केरल छात्र संघ त्रिवेंद्रम शहर समिति के अध्यक्ष, एलआईसी कर्मचारी कांग्रेस, त्रिवेंद्रम मंडल के उपराष्ट्रपति, केरल छात्र संघ, राज्य समिति, महासचिव, केरल छात्र संघ, अध्यक्ष डॉ अम्बेडकर इंस्टीट्यूट ऑफ लीगल स्टडीज, त्रिवेंद्रम, सदस्य केन्द्रीय मत्स्य बोर्ड, दूरसंचार सलाहकार समिति, केरल सर्कल, संयोजक, उपाध्यक्ष, नेहरू युवा केंद्र संगठन, अखिल भारतीय कांग्रेस समिति के सचिव, केरल प्रदेश कांग्रेस समिति और अखिल भारतीय युवा कांग्रेस के महासचिव और कई ट्रेड यूनियनों के पदाधिकारी रह चुके हैं।

17वीं लोकसभा में कोडिकुन्निल सुरेश ने 35 बहसों में हिस्सा लिया और उनके माध्यम से 70 प्रश्न सदन के पटल पर रखे जिनमें सीबीआई जांच, सबरीमला के विकास का मुद्दा, जंगलों की घटती संख्या, संविधान में संशोधन, जम्मू-कश्मीर, टैक्स और टेलीकम्युनिकेशन आदि शामिल हैं। संसद के पहले दोनों सत्रों के दौरान सदन में उनकी कुल उपस्थिति 98% रही।

फेम इंडिया - एशिया पोस्ट "श्रेष्ठ सांसद सर्वे" में व्यक्तित्व, छवि, जनता से जुड़ाव, कार्यशैली, लोकप्रियता, सदन में उपस्थिति, बहस में हिस्सा, प्राइवेट बिल, सदन में प्रश्न, सांसद निधि का उपयोग व सामाजिक सहभागिता आदि 10 मुख्य मापदंड पर किये गये सर्वे में **के सुरेश**, उत्कृष्ट कैटगरी में प्रमुख स्थान पर है।

FAME INDIA

असरदार
★★★★★

दमदार शख्सियत वाले असरदार सांसद हैं

सी आर पाटिल

FAME INDIA

फेम इंडिया मैगज़ीन- एशिया पोस्ट श्रेष्ठ सांसद सर्वे

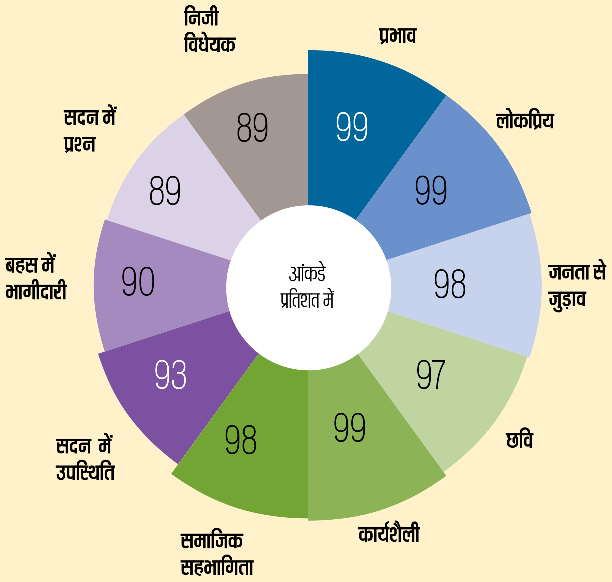

सर्वे स्रोत : विभिन्न प्रश्नों पर संसदीय क्षेत्रों की राय , विधायिका और मीडिया से जुड़े लोगों से स्टेक होल्ड सर्वे और लोकसभा से उपलब्ध डाटा के आधार पर

असरदार

विशेषता -

- संसदीय क्षेत्र में विकास के प्रतीक
- बेहतर सांसद होने के साथ ही असरदार व्यक्तित्व
- भाजपा शीर्ष नेतृत्व के विश्वसनीय राजनेताओं में शामिल

चंद्रकांत रघुनाथ पाटिल यानि सीआर पाटिल एक अनोखे सांसद हैं जिन्होंने अपने क्षेत्र में कई ऐसे सुधार कार्यों को वास्तविकता के धरातल पर उतारा है जिनकी अबतक बस कल्पना ही की गयी थी। एक बेहद लोकप्रिय व दूरदर्शी समाजसेवी होने के अलावे वे एक पत्रकार और व्यवसायी भी हैं।

महाराष्ट्र में अदिलाबाद, जलगांव के पिंपरी अकारौत गांव में 16 मार्च 1955 को जन्मे चंद्रकांत का परिवार गुजरात के सूरत में आकर बस गया था। उन्होंने दसवीं तक की स्कूली पढ़ाई करने के बाद आईटीआई से तकनीकी शिक्षा में डिप्लोमा हासिल किया। उन्होंने अपने करीयर की शुरुआत वर्ष 1975 में गुजरात पुलिस के एक कॉन्सटेबल के तौर पर की, लेकिन कुछ ही वर्षों में पुलिस की नौकरी छोड़ व्यवसाय व समाजसेवा साथ-साथ शुरु की। 1989 में उन्होंने भारतीय जनता पार्टी ज्वाइन की और जल्दी ही संगठन के कार्यों में सक्रियता से जुट गये। वर्ष 1991 में उन्होंने एक अखबार का प्रकाशन भी शुरू किया जिसका नाम रखा नव गुजरात टाइम्स। कई वर्षों तक सक्रिय राजनीति में रहने के बाद वर्ष 2008 में उन्हें पार्टी ने सूरत इकाई का कोषाध्यक्ष नियुक्त किया। वर्ष 2009 में उन्होंने पार्टी के टिकट पर नवसारी लोकसभा सीट से चुनाव लड़ा और जीत का परचम लहराया।

सीआर पाटिल ने समय के साथ-साथ न सिर्फ अपने वोटों का आधार बढ़ाया है बल्कि अपनी लोकप्रियता में गुणात्मक वृद्धि की है। वर्ष 2009 में उन्हें लगभग 56 प्रतिशत वोट प्राप्त हुए थे और वे करीब 1 लाख 32 हजार वोटों से जीते थे। वर्ष 2014 के अगले आम चुनाव में उन्हें करीब 71 प्रतिशत वोट मिले और उन्हें 5 लाख 58 हजार वोट से जीत हासिल हुई। वर्ष 2019 के लोकसभा चुनाव में उन्हें 74 प्रतिशत से भी अधिक वोट मिले और वे रिकॉर्ड 6,89,668 वोटों से जीत कर सांसद बने।

सीआर पाटिल ने अपने चुनाव क्षेत्र के एक गांव 'गणदेवा' को गोद लेकर उसमें कई सुधार कार्य करवाये। सूरत से लगभग 50 किलोमीटर दूर स्थित इस गांव में लगभग 2200 घरों में करीब 7000 लोगों की आबादी रहती है। कुछ साल पहले तक यहां के अधिकतर लोग उपलों और लकड़ियों का ही इस्तेमाल करते थे, लेकिन कुछ ही वर्षों में ये गांव पूरी तरह धुंआ रहित हो गया और आज यहां हरेक घर में गैस स्टोव पर ही खाना बनता है। इसी प्रकार अगले कार्यकाल यानि वर्ष 2014 में उन्होंने चिकली गांव को गोद लिया तो वहां स्ट्रीटलाइट लगी पक्की सड़कें बनवायीं और पब्लिक-प्राइवेट पार्टनरशिप के अधीन 380 टॉयलेट का निर्माण करवाया। अब ये गांव पूरी तरह खुले में शौच से मुक्त है और स्वच्छ भी।

सीआर पाटिल देश के पहले ऐसे सांसद हैं जिन्होंने अपने ऑफिस के लिये आएसओ-9001 सर्टिफिकेशन हासिल किया है। पूरी तरह वैज्ञानिक और आधुनिक सुविधाओं से संपन्न इस ऑफिस में क्षेत्र के हर आने-जाने वाले का हिसाब रखा जाता है और उसकी किस मांग पर कब क्या कार्रवाई हुई ये भी कंप्युटर में दर्ज होता है।

सीआर पाटिल छत्रपति शिवाजी के व्यक्तित्व से खासे प्रभावित हैं और उनकी प्रतिमा स्थापित करने की समिति में सक्रिय भूमिका में हैं। वे सूरत की करीब एक दर्जन संस्थाओं के अध्यक्ष और प्रशासक मंडल के महत्त्वपूर्ण सदस्य हैं। उन्होंने शिवाजी के जीवन पर आधारित एक नाटक 'जनता राज' तैयार करवाया है जिसका मंचन कई जगहों पर करवाया गया है। बेटी बचाओ आंदोलन से भी जुड़े हैं और गुजराती-मराठी संस्कृतियों के आपसी मेल-जोल को बढ़ावा देने में जुटे हैं। उन्होंने सूरत के गोविंदा उत्सव को संरक्षण दिया और मोदी समर्थक महिला मंडल से 70 हजार महिलाओं को जोड़ने का अद्भुत प्रयोग किया है।

फेम इंडिया - एशिया पोस्ट "श्रेष्ठ सांसद सर्वे" में व्यक्तित्व, छवि, जनता से जुड़ाव, कार्यशैली, लोकप्रियता, सदन में उपस्थिति, बहस में हिस्सा, प्राइवेट बिल, सदन में प्रश्न, सांसद निधि का उपयोग व सामाजिक सहभागिता आदि 10 मुख्य मापदंड पर किये गये सर्वे में **सी आर पाटिल**, असरदार कैटगरी में प्रमुख स्थान पर है।

बेजोड़

बेहतरीन कार्यक्षमता के बेजोड़ सांसद

नामा नागेश्वर राव

FAME INDIA

फेम इंडिया मैगज़ीन- एशिया पोस्ट श्रेष्ठ सांसद सर्वे

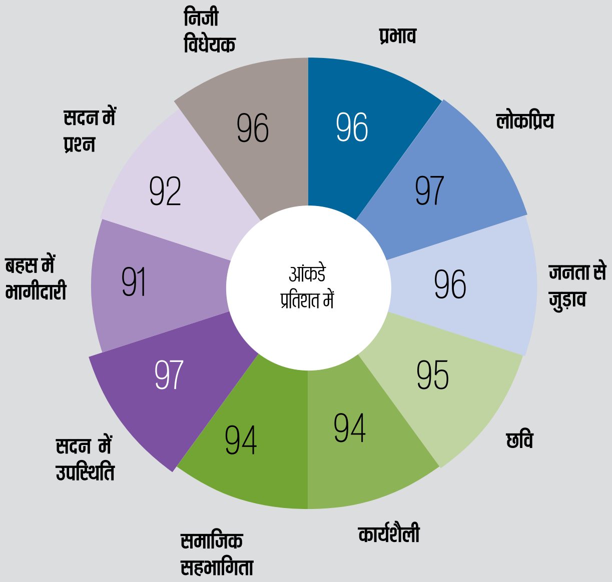

सर्वे स्रोत : विभिन्न प्रश्नों पर संसदीय क्षेत्रों की राय , विधायिका और मीडिया से जुड़े लोगों से स्टेक होल्ड सर्वे और लोकसभा से उपलब्ध डाटा के आधार पर

बेजोड़

विशेषता -

- तेलंगाना की राजनीति में विशिष्ट स्थान
- संसद में बहस के दौरान अपनी शालिनता बनाये रखने के लिए चर्चित
- जनसरोकार के मामलों में भागीदारी रखने वाले राजनेता

कहते हैं फलदार वृक्ष ही झुकते हैं और जिन्हें झुकना नहीं आता वे हवा के मामूली झोंके में उखड़ जाते हैं। ऐसे ही विनम्र और मृदुभाषी स्वभाव के हैं देश के सबसे धनाढ़्य राजनेताओं में से एक नामा नागेश्वर राव।

महबूबाबाद के बालापाल में 15 मार्च 1957 को जन्मे नामा नागेश्वर राव की शिक्षा-दीक्षा स्थानीय स्कूल से हुई। इंटरमीडिएट करने के बाद उन्होंने व्यापार में भाग्य आजमाया और मधुकॉन प्रोजेक्ट्स के नाम से इंफ्रास्ट्रक्चर कंपनी शुरू की। उनका कारोबार चल निकला। राजनीति की शुरुआत तेलगूदेशम पार्टी के साथ की जिसके बैनर पर वर्ष 2004 में 15वीं लोकसभा का चुनाव खमम सीट से तत्कालीन सांसद रेणुका चौधरी के खिलाफ लड़ा। पहले प्रयास में सफलता नहीं मिली, लेकिन अगली बार यानी वर्ष 2009 में उन्हें जीत हासिल हुई और 15वीं लोकसभा के सदस्य बने। तब उन्हें देश के सबसे धनी सांसद के तौर पर पहचान मिली थी। उन्होंने अपनी निजी संपत्ति 113 करोड़ रूपये की घोषित की थी।

नामा नागेश्वर राव ने वर्ष 2009 से लेकर 2014 तक खम्मम लोकसभा क्षेत्र का प्रतिनिधित्व किया। वे टीडीपी से पन्द्रह वर्षों से जुड़े रहे और लोकसभा में उन्होंने टीडीपी संसदीय दल के नेता के रूप में भी अपनी सेवाएं दी। उनका लोकसभा क्षेत्र खम्मम तेलंगाना में पड़ता है और राज्य विभाजन के बाद वहां तेलगुदेशम पार्टी की लोकप्रियता लगभग नगण्य हो गयी थी। संभवतः इसी कारण से उन्होंने वर्ष 2019 आते-आते टीडीपी की गतिविधियों से किनारा कर लिया था और तेलंगाना के मुख्यमंत्री के चंद्रशेखर राव की की पार्टी टीआरएस ज्वॉइन कर ली। उन्होंने अपने क्षेत्रवासियों से संपर्क हमेशा कायम रखा। पार्टी आलाकमान ने उनकी लोकप्रियता और प्रभाव देखते हुए खम्मम से निवर्तमान संसद पी. श्रीनिवास रेड्डी की जगह नामा नागेश्वर राव को लोकसभा चुनाव में उम्मीदवार के तौर पर उतारा। वे भारी मतों से विजयी हुए।

नामा नागेश्वर राव का समाज सेवा के क्षेत्र में बड़ा योगदान है। उन्होंने नामा मुथैया मेमोरियल ट्रस्ट के अंतर्गत खमम के कई शहरी क्षेत्रों और आसपास के ग्रामीण में पीने का पानी पहुंचाने का काम किया। इसके अलावा पीने के पानी के पैकेट, किसानों के लिये बोरवेल, आदि की व्यवस्था करवाते हैं तथा खास तौर पर सूखे की चपेट में आने वाले गांवों को प्राथमिकता देते हैं। बतौर सांसद वे खासे सक्रिय हैं। उन्होंने पहले दो सत्रों में ही लोकसभा की 18 बहसों में सक्रिय भागीदारी निभायी। उन्होंने सदन में कुल 27 प्रश्न पूछे जो मुख्यतः जलशक्ति, स्वास्थ्य, वानिकी व पर्यावरण, सामाजिक न्याय और रेलवे आदि से संबंधित रहे। उन्होंने लोकसभा में छह सरकारी विधेयक प्रस्तुत किये हैं। उन्हें संसद की लाइब्रेरी कमेटि का अध्यक्ष बनाया गया है। वे सामान्य उद्देश्य और सहायक कानून की संसदीय समितियों के सदस्य भी बनाये गये हैं। दोनों सत्रों को मिलाकर सदन में उनकी उपस्थिति 97 प्रतिशत रही।

फेम इंडिया - एशिया पोस्ट "श्रेष्ठ सांसद सर्वे" में व्यक्तित्व, छवि, जनता से जुड़ाव, कार्यशैली, लोकप्रियता, सदन में उपस्थिति, बहस में हिस्सा, प्राइवेट बिल, सदन में प्रश्न, सांसद निधि का उपयोग व सामाजिक सहभागिता आदि 10 मुख्य मापदंड पर किये गये सर्वे में **नामा नागेश्वर राव**, बेजोड़ कैटगरी में प्रमुख स्थान पर है।

FAME INDIA

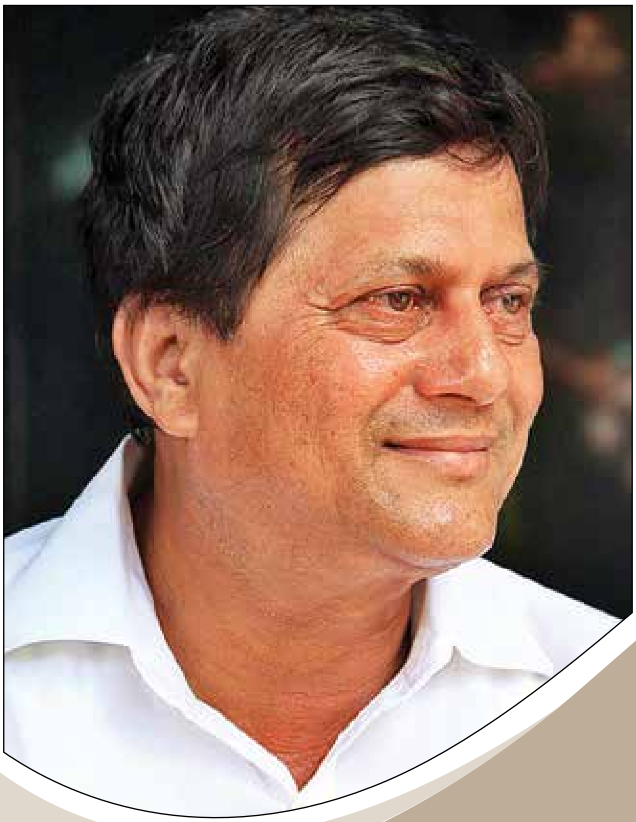

चर्चित

समाज में सकारात्मक बदलाव की बुलंद आवाज है

डॉ अच्युत सामंत

फेम इंडिया मैगज़ीन- एशिया पोस्ट श्रेष्ठ सांसद सर्वे

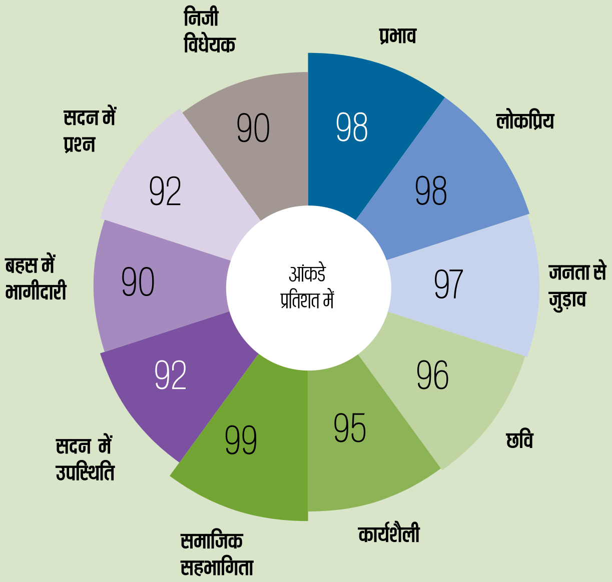

सर्वे स्रोत : विभिन्न प्रश्नों पर संसदीय क्षेत्रों की राय , विधायिका और मीडिया से जुड़े लोगों से स्टेक होल्ड सर्वे और लोकसभा से उपलब्ध डाटा के आधार पर

चर्चित

विशेषता -

- आदिवासीयों और जनजातियों के विकास के लिए बेजोड़ कार्य कर दुनिया भर में पहचान कायम की
- सहज , सरल और सुलभ व्यक्तित्व
- ऐसे राजनेता जो समाज प्रवर्तक की भूमिका निभा रहे हैं

अपने लिए पढ़ना और फिर दूसरों को पढ़ाने और उनकी जिंदगी रोशन करने का जज़्बा रखना, बहुत कम देखने को मिलता है। ऐसी ही एक बेजोड़ शख्शियत का नाम है डॉ अच्युत सामंत। ओडिशा के कंधमाल से लोकसभा सांसद अच्युत सामंत ने वो काम कर दिखाया है जो सोच से परे है उनकी जिजीविषा और कर्मठता ही है जो आज कई साधन विहीन बच्चों को उनके सपनों को पूरा करने में मदद करती है।

ओडिशा के कटक जिले के कलारबंका गाँव में 20 जनवरी 1964 को जन्मे अच्युत के सर से मात्र 4 साल की उम्र में ही पिता का साया उठ गया। भारी अभाव और गरीबी के बावजूद उन्हें और उनके सात भाई-बहनों को की माँ निर्मला रानी ने हिम्मत के साथ पाला। उन्होंने उत्कल विश्वविद्यालय से रसायन विज्ञान में एएससी की और भुवनेश्वर के महर्षि महाविद्यालय में पढ़ाने लगे। वर्ष 1992-93 में मात्र 5000 रुपये के साथ औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान शुरू करने सपनें को साकार करने उन्होंने संकल्प लिया जिसे कोई भी कठिनाई डगमगा नहीं सकी। इस तरह शुरुआत हुई कलिंग इंस्टीट्यूट ऑफ इंडस्ट्रियल टेक्नोलॉजी (केआईआईटी) की। आज ये संस्थान एक विश्वविद्यालय का रूप ले चुका है और भारत के सबसे नामी शिक्षा केंद्रों में से एक है। ये अच्युत सामंत की मेहनत ही है जो इसे भारत के अन्य प्रसिद्ध और लोकप्रिय संस्थानों से अलग ऊंचाइयों पर ले जा सके। इस संस्थान में लगभग 60,000 आदिवासी बच्चों को पढ़ाई के साथ-साथ आवास, व्यवसाय और खेल में कैरियर बनाने के लिए हर संभव सहायता उपलब्ध करवाती है। यहाँ बालवाड़ी से पोस्ट ग्रेजुएशन तक निः शुल्क शिक्षा दी जाती है। उन्होंने कलारबंका को विकसित किया। 15 मंदिरों, सामुदायिक हॉल, डाकघर, पुलिस चौकी, संपर्क सड़कों के साथ, राष्ट्रीयकृत बैंकों के साथ एटीएम और लॉकर की सुविधा, पीने का पानी, और स्ट्रीटलाइट्स गाँव में शहर की सुख-सुविधाओं को लाने के लिए काम किये है। उन्होंने कलारबंका में पढ़ाई और साक्षरता दर को आगे बढ़ाने के लिए एक अंग्रेजी मीडियम स्कूल और एक बोर्डिंग स्कूल खोला है। उन्होंने आदिवासियों के पुनर्वास और मुख्यधारा में लाने के लिए काम करना शुरू किया जिसमें उन्हें अच्छी सफलता मिली और इसी के बदौलत वो अपनी जनता का दिल जीतने में कामयाब रहे। डॉ. अच्युत सामंत ने बतौर सांसद अपने लोकसभा क्षेत्र की सूरत बदल दी है। एमडीएच के साथ मसालों को लेकर समझौता किया है जिससे मसाला स्थानीय व्यापार में तेजी आ सके। गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम के तहत उनका उद्देश्य लोगों को साक्षर करके स्वालम्बी करना है।

डॉ. सामंत ने केआईआईटी विश्वविद्यालय की सहायता से, गाँव-गाँव में वाई-फाई, महिलाओं के लिए 100 बिस्तरों वाला एक हॉस्पिटल एक नॉलेज सेंटर और सेल्फ सहायता ग्रुप बनाया, जो 1000 से अधिक लोगों को बेहतर जीवन रोजगार प्रदान करने के लिए सहायता प्रदान करता है। अपने गाँव को आदर्श बनाने के बाद, ओडिशा के कटक जिले में मानपुर की पूरी ग्राम पंचायत, 6 गाँवों को मिलाकर और सुविधाओं का विस्तार करके मॉडल पंचायत में तब्दील करवाया है। मॉडल पंचायत के रूप में विकसित होने वाला यह देश का पहला पंचायत है।

डॉ. अच्युत सामंत ने वर्ष 2010 के आम चुनाव में कंधमाल लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र से जीत हासिल की। वे पहली बार चुनाव जीतकर 17वीं लोकसभा में पहुंचे है। इससे पहले वो राज्यसभा के सदस्य थे। 17वीं लोकसभा में डॉ. सामंत ने 6 डिबेट में हिस्सा लिया। उन्होंने 24 प्रश्न रखे और सदन में उनकी कुल उपस्थिति 92% रही।

फेम इंडिया - एशिया पोस्ट "श्रेष्ठ सांसद सर्वे" में व्यक्तित्व, छवि, जनता से जुड़ाव, कार्यशैली, लोकप्रियता, सदन में उपस्थिति, बहस में हिस्सा, प्राइवेट बिल, सदन में प्रश्न, सांसद निधि का उपयोग व सामाजिक सहभागिता आदि 10 मुख्य मापदंड पर किये गये सर्वे में **डॉ अच्युत सामंत**, चर्चित कैटगरी में प्रमुख स्थान पर है।

FAME INDIA

मजबूत आत्मबल और क्षमतावान व्यक्तित्व के धनी हैं

विनायक राउत

फेम इंडिया मैगज़ीन- एशिया पोस्ट श्रेष्ठ सांसद सर्वे

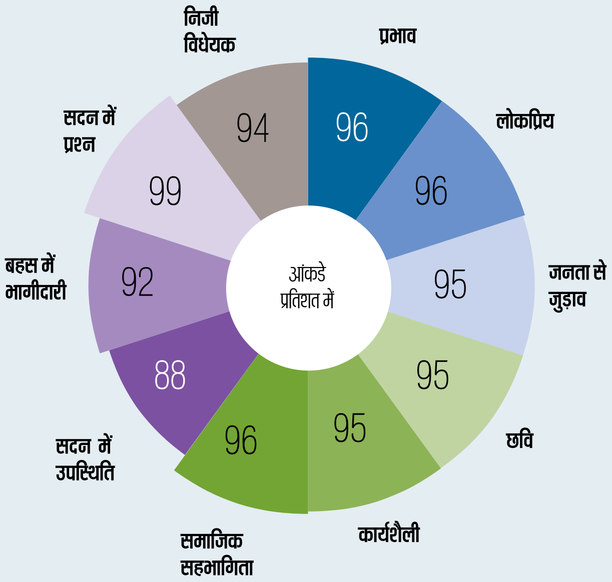

सर्वे स्रोत : विभिन्न प्रश्नों पर संसदीय क्षेत्रों की राय , विधायिका और मीडिया से जुड़े लोगों से स्टेक होल्ड सर्वे और लोकसभा से उपलब्ध डाटा के आधार पर

क्षमतावान

★★★★★

विशेषता -

- मिलनसार स्वभाव के जमीनी राजनेता
- राज्य की राजनीति में क्षमतावान छवि
- संसदीय क्षेत्र और पार्टी में मजबूत पकड़

बहुत कम लोग ऐसे होते हैं जो अपनी लगन एवं ईमानदारी के बल पर फर्श से अर्श तक का सफर तय कर पाते हैं। महाराष्ट्र के रत्नागिरी-सिंधुदुर्ग से सांसद विनायक राउत एक ऐसे ही राजनेता हैं। उन्होंने एक निगम पार्षद के तौर पर राजनीतिक जीवन शुरु कर प्रदेश के सबसे योग्य सांसद बनने तक का सफर अपनी लगन व मेहनत के दम पर तय किया है।

विनायक भाउराव राउत का जन्म 15 मार्च 1954 को महाराष्ट्र के सिंधुदुर्ग जिले के तलगांव में हुआ था। उनकी स्कूली शिक्षा सिंधुदुर्ग में ही हुई। मुंबई विश्वविद्यालय से राजनीतिशास्त्र में एमए की डिग्री हासिल कर वे कारोबार में शामिल हो गये। समाजसेवा का जज्बा दिल मे था तो राजनीति में उतरने की सोची। बाला साहेब ठाकरे की विचारधारा से प्रभावित होकर उन्होंने शिवसेना ज्वाइन की और मुंबई की स्थानीय राजनीति में कदम रखा। 1985 में उन्होंने विले पार्ले से बृह्ममुंबई नगर निगम यानी बीएमसी के पार्षद पद का चुनाव लड़ा और विजयी हुए। 1992 तक वे पार्षद रहे फिर कुछ वर्षों तक संगठन की जिम्मेदारी निभाने में शामिल हो गये। 1999 में विले पार्ले क्षेत्र से ही महाराष्ट्र विधानसभा के चुनाव में शिवसेना उम्मीदवार के तौर पर उतरे और जीते। 2012 में उन्हें महाराष्ट्र विधान परिषद का सदस्य चुना गया। दो साल बाद ही वर्ष 2014 में उन्हें पार्टी के टिकट पर 16वीं लोकसभा के लिये उनके गृह जिले सिंधुदुर्ग से चुनाव लड़ने का मौका मिला। यह एक ऐसी सीट थी जिसपर वर्ष 2009 में दिग्गज शिवसेना नेता सुरेश प्रभु हार चुके थे और कांग्रेस का कब्जा था, लेकिन उन्होंने हिम्मत नहीं हारी। जनता से संवाद स्थापित करने में उन्हें सफलता मिली और उनकी शानदार जीत हुई। क्षेत्र में किये गये उनके कार्यों और लोगों से संपर्क बनाये रखने की उनकी कला के कारण क्षेत्र के मतदाता उनसे बेहद प्रसन्न रहते हैं। इलाके की जनता ने उन्हें दोबारा मौका दिया और भारी बहुमत से विजयी बनाया।

17वीं लोकसभा के पहले दो सत्रों में ही उन्होंने 23 बहसों व 6 विशेष उल्लेख चर्चाओं में सक्रिय भागीदारी की। उन्होंने स्वास्थ्य, कृषि, रोजगार, सड़क परिवहन आदि से जुड़े 126 प्रश्न व 2 पूरक प्रश्न किये। उन्होंने चार सरकारी बिलों को संसद में पेश किया है। उन्हें चार संसदीय कमेटियों का सदस्य बनाया गया है जिनमें जेनरल परपस, कृषि, वित्त संबंधी कमेटि और बिजनेस एडवाइजरी कमेटि शामिल हैं। दोनों सत्रों को मिला कर सदन में उनकी उपस्थिति 88 प्रतिशत रही।

फेम इंडिया - एशिया पोस्ट "श्रेष्ठ सांसद सर्वे" में व्यक्तित्व, छवि, जनता से जुड़ाव, कार्यशैली, लोकप्रियता, सदन में उपस्थिति, बहस में हिस्सा, प्राइवेट बिल, सदन में प्रश्न, सांसद निधि का उपयोग व सामाजिक सहभागिता आदि 10 मुख्य मापदंड पर किये गये सर्वे में **विनायक राउत**, **क्षमतावान** कैटगरी में प्रमुख स्थान पर है।

FAME INDIA

लोकप्रिय

हर किसी से जुड़ने की कला में माहिर हैं लोकप्रिय सांसद

जनार्दन सिंह सिग्रीवाल

FAME INDIA

फेम इंडिया मैगज़ीन- एशिया पोस्ट
श्रेष्ठ सांसद सर्वे

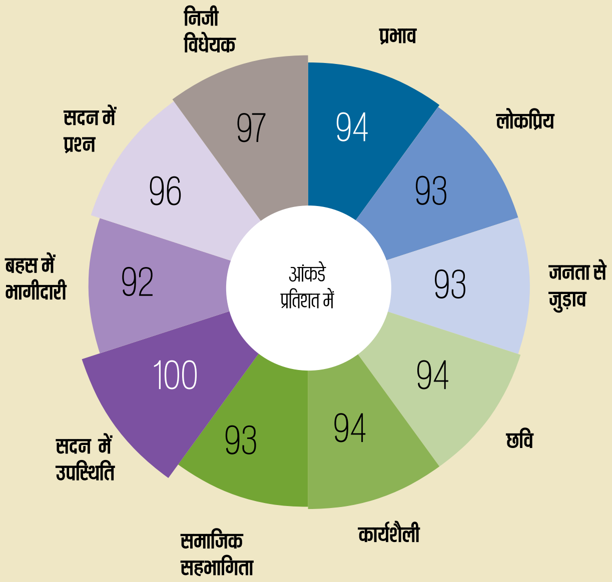

सर्वे स्रोत : विभिन्न प्रश्नों पर संसदीय क्षेत्रों की राय , विधायिका और मीडिया से जुड़े लोगों से स्टेक होल्ड सर्वे और लोकसभा से उपलब्ध डाटा के आधार पर

लोकप्रिय

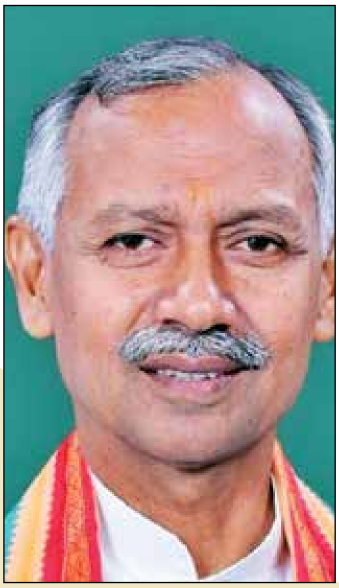

विशेषता -

- बेहद जिम्मेदार छवि के जनोपयोगी कार्यों को प्राथमिकता देने वाले सांसद
- पार्टी और संगठन के लिए समर्पित राजनेता
- शालिन व्यक्तित्व और इमानदारी के लिए प्रसिद्ध

बिहार की राजनीति में जनार्दन सिंह सिग्रीवाल का नाम एक ऐसे सम्मानित राजनेता के तौर पर लिया जाता है जो अबतक अपराजेय रहे हैं। महाराजगंज के इस भाजपा सांसद को मिलनसार और कर्मठ राजनेता माना जाता है। 2 जनवरी 1959 को सारण जिले के भुमिहारा गांव में एक साधारण किसान परिवार में जन्मे जनार्दन सिंह सिग्रीवाल ने अपनी पढ़ाई छपरा में ही की।

जनार्दन सिंह सिग्रीवाल ने छपरा के राजेन्द्र कॉलेज से राजनीति शास्त्र में एमए की डिग्री हासिल की और समाज सेवा के कार्यों में जुट गये। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से वे कॉलेज के दिनों में ही जुड़ गये थे। कॉलेज के दिनों में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (एबीवीपी) की राजनीति भी की। वर्ष 1997–2000 के दौरान वे एबीवीपी व भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के कई पदों पर रहे।

कला और संस्कृति से उनका गहरा लगाव है और वे अपने चुनावी क्षेत्र के अलावे विभिन्न स्थानों पर भोजपुरी कलाकारों के प्रोत्साहन के लिये सांस्कृतिक आयोजन करते रहते हैं। उनके इसी कला-प्रेम को देखते हुए उन्हें मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने कला-संस्कृति मंत्री भी बनाया था। इस दौरान उन्होंने गंगा स्नान का जो ऐतिहासिक आयोजन किया था उसकी चर्चा आज भी होती है।

सत्रहवीं लोकसभा के लिये वर्ष 2019 के आम चुनाव में दूसरी बार चुन कर आये जनार्दन सिंह सिग्रीवाल वर्ष 2014 में पहली बार सांसद बनने से पूर्व लगातार चार बार बिहार विधान सभा के सदस्य चुने जा चुके हैं। वे सारण के जलालपुर विधानसभा से 2000, फरवरी 2005 व अक्टूबर 2005 में लगातार विजय प्राप्त कर विधायक बनते रहे। वर्ष 2010 के विधानसभा चुनाव तक डिलिमिटेशन के कारण जलालपुर का विलय हो गया तो उन्होंने छपरा से चुनाव लड़ा। वहां वे उस इलाके के प्रभावशाली राजनेता प्रमेंद्र रंजन सिंह को हरा कर विधायक बने। वर्ष 2003-05 में वे प्रदेश भाजपा के महामंत्री भी रहे और वर्ष 2008-10 में सारण जिलाध्यक्ष बने। वे नीतीश कुमार की भाजपा गठबंधन सरकार में श्रम, युवा, कला एवं संस्कृति जैसे विभागों के मंत्री भी रह चुके हैं। आम तौर पर मीडिया और प्रचार से दूर रहने वाले सिग्रीवाल का कार्यकाल सांसद के रूप में अच्छा माना जाता है।

सत्रहवीं लोकसभा में अबतक उनकी उपस्थिति शत प्रतिशत रही है। वे अब तक सात प्रश्न पूछ चुके हैं। वर्ष 2019 के सितंबर में उन्हें लोकसभा की पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मामलों की स्थायी समिति का और अक्टूबर में प्रिविलेज की स्थायी समिति का सदस्य बनाया गया है।

जनार्दन सिंह सिग्रीवाल का लगाव खेल और स्वास्थ्य से भी गहरा रहा है। उन्होंने समय समय पर गंभीर बीमारियों से बचाव के लिये स्वास्थ्य कैंप और अन्य आयोजन भी किये। फुटबॉल, वॉलीबॉल और एथलेटिक्स में उनकी खासी दिलचस्पी है औऱ अक्सर वे इनके आयोजनों में भी बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेते हैं।

फेम इंडिया - एशिया पोस्ट "श्रेष्ठ सांसद सर्वे" में व्यक्तित्व, छवि, जनता से जुड़ाव, कार्यशैली, लोकप्रियता, सदन में उपस्थिति, बहस में हिस्सा, प्राइवेट बिल, सदन में प्रश्न, सांसद निधि का उपयोग व सामाजिक सहभागिता आदि 10 मुख्य मापदंड पर किये गये सर्वे में **जनार्दन सिंह सिग्रीवाल**, **लोकप्रिय** कैटगरी में प्रमुख स्थान पर है।

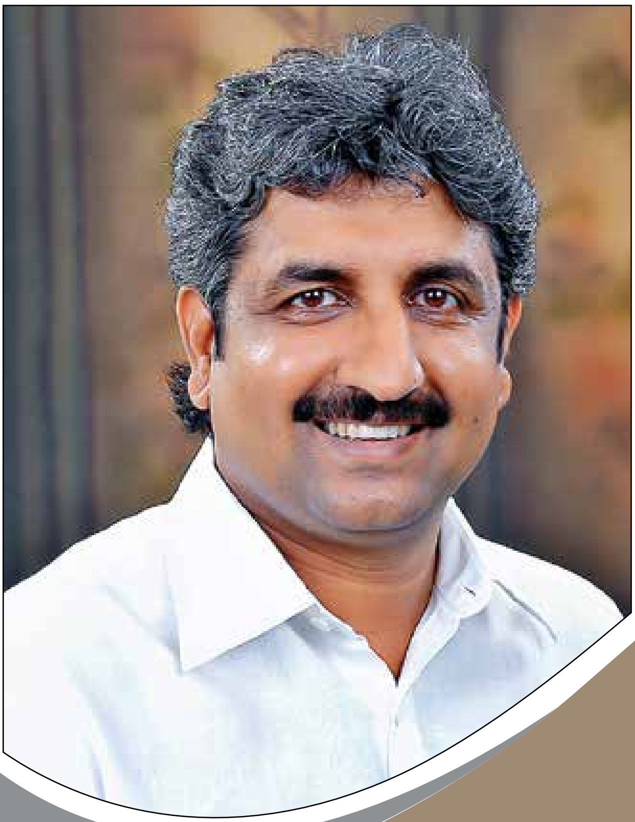

सुनहरे भविष्य का विजन रखने वाले आदर्श सांसद हैं

शिवकुमार चनाबासप्पा उदासी

फेम इंडिया मैगज़ीन- एशिया पोस्ट श्रेष्ठ सांसद सर्वे

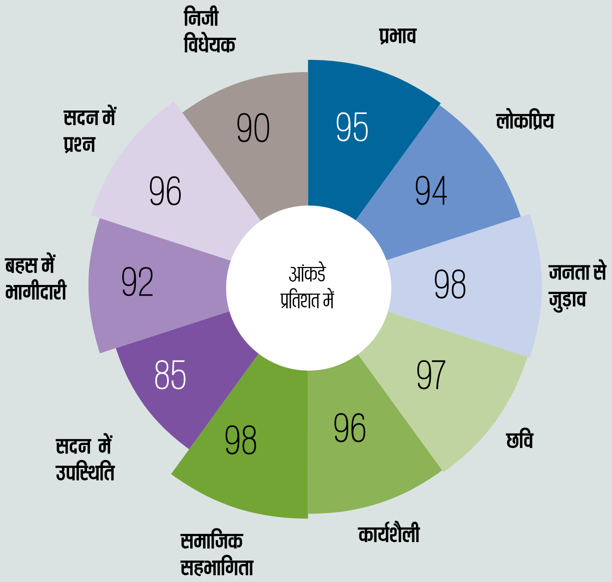

सर्वे स्रोत : विभिन्न प्रश्नों पर संसदीय क्षेत्रों की राय , विधायिका और मीडिया से जुड़े लोगों से स्टेक होल्ड सर्वे और लोकसभा से उपलब्ध डाटा के आधार पर

आदर्श

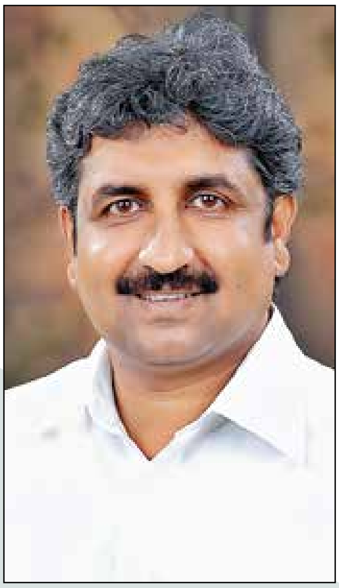

विशेषता -

- हर राजनैतिक दलों के राजनेताओं से बेहतर संबंध रखने वाले राजनेता
- संसदीय क्षेत्र में जनता के बीच आदर्श छवि
- सूझबूझ और दूरदर्शिता से निर्णय लेने की अच्छी क्षमता

कहते हैं अगर हौसला बुलंद हो तो इंसान तूफान का भी रुख मोड़ दे सकता है। कर्नाटक के हावेरी से तीन बार के सांसद शिवकुमार उदासी ऐसे ही व्यक्ति हैं। उन्होंने अपनी पहली जीत ऐसे समय में भाजपा के टिकट पर हासिल की जब पूरे देश में कांग्रेस का बोलबाला था।

शिवकुमार उदासी का जन्म 22 मई 1987 को कर्नाटक के हावेरी में एक संपन्न परिवार में हुआ। स्कूली पढ़ाई बीजापुर के सैनिक स्कूल में हुई। वे एक मेधावी छात्र थे और उनका चयन बैंगलोर इंस्टीच्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी में हो गया। वहां से इंजीनियरिंग की डिग्री हासिल करने के बाद उन्होंने बतौर बिल्डर अपना करीयर शुरू किया और इस क्षेत्र में अच्छी सफलता हासिल की। समाजसेवा का जज्बा शुरू से दिल में था जिसे पूरा करने के लिये वे राजनीति में उतरे।

वर्ष 2009 में उन्होंने भारतीय जनता पार्टी के टिकट पर अपनी जन्मभूमि हावेरी से 15वीं लोकसभा की सदस्यता के लिये चुनाव लड़ा। हालांकि कर्नाटक समेत पूरे देश में कांग्रेसी नेतृत्त्व वाले यूपीए का बोलबाला था, लेकिन शिवकुमार उदासी ने कांग्रेसी उम्मीदवार सलीम अहमद पर जीत हासिल की। अगली बार यानि वर्ष 2014 में 16वीं लोकसभा के चुनाव में उन्होंने दोबारा कांग्रेसी उम्मीदवार सलीम अहमद को ही पराजित किया। वर्ष 2019 में 17वीं लोकसभा के लिये होने वाले चुनाव में उन्होंने कांग्रेस के डी आर पाटिल को हराकर अपनी सदस्यता पक्की की। खास बात ये रही कि शिवकुमार हर चुनाव में अपने जनसमर्थन का प्रतिशत बढ़ाते गये। वर्ष 2019 में उन्हें 49.33 प्रतिशत वोट मिले ते जबकि वर्ष 2014 में 50.79 और वर्ष 2019 में लगभग 54 प्रतिशत जनसमर्थन हासिल कर उन्होंने दिखा दिया कि अगर सच्चाई और लगन से जनता की सेवा कि जाये तो लोग अपने राजनेता को बढ़-चढ़ कर प्यार देते हैं।

कर्म को पूजा मानने वाले सांसद शिवकुमार उदासी का प्रदर्शन शानदार रहा है। उन्होंने पिछले दो सत्रों के छोटे से कार्यकाल में 70 प्रश्न उठाये हैं जो कृषि, स्वास्थ्य, नारी सशक्तिकरण, खनन, और रोजगार आदि विषयों से संबंधित हैं। उन्होंने 16 बहसों और 9 विशेष उल्लेख की चर्चाओं में सक्रिय भागीदारी की है। सदन में उनकी उपस्थिति लगभग 85 प्रतिशत रही और उन्होंने इस दौरान सदन में एक सरकारी बिल भी पेश किया। उन्हें ऊर्जा संबंधित संसद की स्टैंडिंग कमेटि का सदस्य बनाया गया है। उन्होंने अपने क्षेत्र में प्रगति की नयी कहानी लिखी है। उनका क्षेत्र उज्जवला योजना के मामले में प्रदेश भर में पहले नंबर पर है। उन्होंने सड़कों पर विशेष ध्यान दिया है और उनके क्षेत्र के दो शहरों को अमृत सिटी परियोजना में शामिल किया गया है। उनके इलाके में बहने वाली दो नदियों वरदा और बेदती को जोड़ने के कार्य में तेजी लाना और अपने क्षेत्र में रेलवे के इंफ्रास्ट्रक्चर को बढ़ावा देना उनकी प्रमुखताओं में शामिल है।

शिवकुमार उदासी दुनिया के कई देशों की यात्राएं कर चुके हैं और किताबें पढ़ने व क्रिकेट खेलने के शौकीन हैं।

फेम इंडिया - एशिया पोस्ट "श्रेष्ठ सांसद सर्वे" में व्यक्तित्व, छवि, जनता से जुड़ाव, कार्यशैली, लोकप्रियता, सदन में उपस्थिति, बहस में हिस्सा, प्राइवेट बिल, सदन में प्रश्न, सांसद निधि का उपयोग व सामाजिक सहभागिता आदि 10 मुख्य मापदंड पर किये गये सर्वे में **उदासी शिवकुमार**, आदर्श कैटगरी में प्रमुख स्थान पर है।

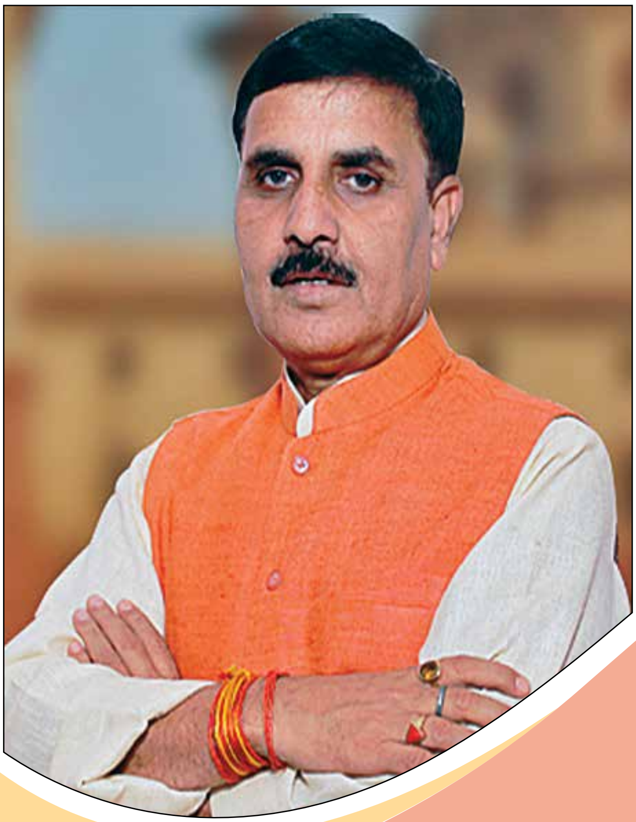

योग्यता से अपनी पहचान बनाते सांसद

विनोद सोनकर

फेम इंडिया मैगज़ीन- एशिया पोस्ट श्रेष्ठ सांसद सर्वे

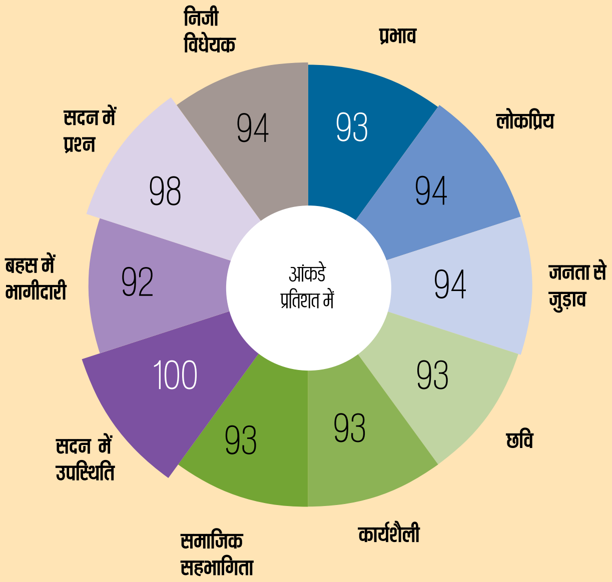

सर्वे स्रोत : विभिन्न प्रश्नों पर संसदीय क्षेत्रों की राय , विधायिका और मीडिया से जुड़े लोगों से स्टेक होल्ड सर्वे और लोकसभा से उपलब्ध डाटा के आधार पर

योग्य

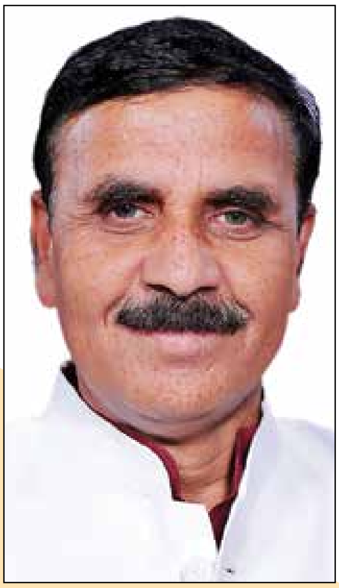

विशेषता -

- मजबूत इरादों के मेहनती सांसद
- पार्टी संगठन में जमीनी स्तर से जुड़े राजनेता की छवि
- एससी-एसटी वर्ग में खासी पकड़

गरीबी किसे कहते हैं ये तो सभी को पता होगा लेकिन अभाव में जीना और उसी कमजोरी को अपनी ताकत बनाकर राष्ट्रीय पटल पर छा जाने की कला कम ही लोगों को आती है। कुछ दशक पहले रेहड़ी पर फल बेचने वाला बच्चा संसद के गलियारों में सांसद की हैसियत से घूमेगा ये बात कहानियों से आगे की नहीं लगतीं। विनोद सोनकर नाम है उस शख्स का जिसने इस लगभग असंभव से दिखने वाले किस्से को सच कर दिखाया है।

फेम इंडिया - एशिया पोस्ट "श्रेष्ठ सांसद सर्वे" में व्यक्तित्व, छवि, जनता से जुड़ाव, कार्यशैली, लोकप्रियता, सदन में उपस्थिति, बहस में हिस्सा, प्राइवेट बिल, सदन में प्रश्न, सांसद निधि का उपयोग व सामाजिक सहभागिता आदि 10 मुख्य मापदंड पर किये गये सर्वे में **विनोद सोनकर**, योग्य कैटगरी में प्रमुख स्थान पर है।

विनोद सोनकर का जन्म 18 फरवरी 1970 को इलाहाबाद के सदियापुर में हुआ था।

उनके पिता अमरनाथ सोनकर ठेले पर फल बेचते थे और माता चम्पी देवी सोनकर गोबर के कंडे बनाकर आस-पास के घरों में बेचती थीं जिसमें पूरा परिवार साथ देता था। ऐसी मुश्किल परिस्थितियों में संघर्षों से आगे बढ़ कर विनोद ने इलाहाबाद के सीएवी इंटर कॉलेज से इंटरमीडिएट की पढ़ाई पूरी की और इलाहाबाद विश्वविद्यालय से स्नातक की डिग्री हासिल की। उनकी गरीबी का आलम ये था कि इलाहाबाद की प्रसिद्ध "पजावा रामलीला" के समय पेड़ों से गिरी इमली को बिन बिन कर बेचा करते थे। बचपन में उनके पथरी के ऑपरेशन के लिये पिता का ठेला भी बिक गया और माता ने दूसरों के घरों में बर्तन भी मांजे।

पढ़ाई खत्म होने के बाद विनोद सोनकर ने फलों का कारोबार शुरू किया। उनके दिल मे हमेशा अपने समाज के गरीब और वंचित लोगों के लिये वो सब कुछ करने की इच्छा हुई जिससे उनके जीवन में गरीबी के अंधेरे को समृद्धि के प्रकाश से बदल सकें। वे कई वर्षों तक अखिल भारतीय खटीक समाज से जुड़े रहे व लगातार कई वर्षों तक प्रदेश सचिव रहे। वे कई वर्षों से भारतीय जनता पार्टी से भी जुडे थे। वर्ष 2014 में जब भाजपा ने कौशांबी से चुनाव लड़ने के लिये स्वच्छ व ईमानदार छवि वाले दलित उम्मीदवार की तलाश शुरू की तो विनोद सोनकर पहली पसंद के तौर पर उभरे। पार्टी ने उन्हें चुनाव मैदान में उतारा तो जोरदार जीत मिली। उन्होंने कौशाम्बी लोकसभा क्षेत्र में विकास के कई कार्य करवाये जिनसे जनता ने उन्हें वर्ष 2019 के चुनाव में दोबारा चुनकर 17वीं लोकसभा में भेजा।

विनोद सोनकर को संसदीय मूल्यों में पूरी निष्ठा है और पहले दो सत्रों में उनकी उपस्थिति शत प्रतिशत रही है। उन्होंने 16 बहसों और 8 विशेष उल्लेख की चर्चाओं में सक्रिय भागीदारी की है। कुल 57 दिनों के दोनों सत्रों में उन्होंने 84 प्रश्न और एक पूरक प्रश्न पूछे हैं जो स्वास्थ्य, पर्यावरण, कृषि, ग्रामीण विकास और रोजगार आदि से संबंधित हैं। उन्होंने एक सरकारी और दो प्राइवेट बिल सदन में पेश किये हैं तथा एक प्राइवेट मेंबर रिजॉल्यूशन भी प्रस्तुत किया है। वे संसद की एथिक्स कमेटि के चेयरमैन हैं और जेनरल परपस कमेटि तथा पेट्रोलियम व प्राकृतिक गैस की स्टैंडिंग कमेटियों के सदस्य हैं।

विनोद सोनकर बेहद दयालु और धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति हैं और कहते हैं कि वे अपने पास आये किसी भी जरूरतमंद व्यक्ति को कभी खाली हाथ नहीं लौटाते।

शानदार

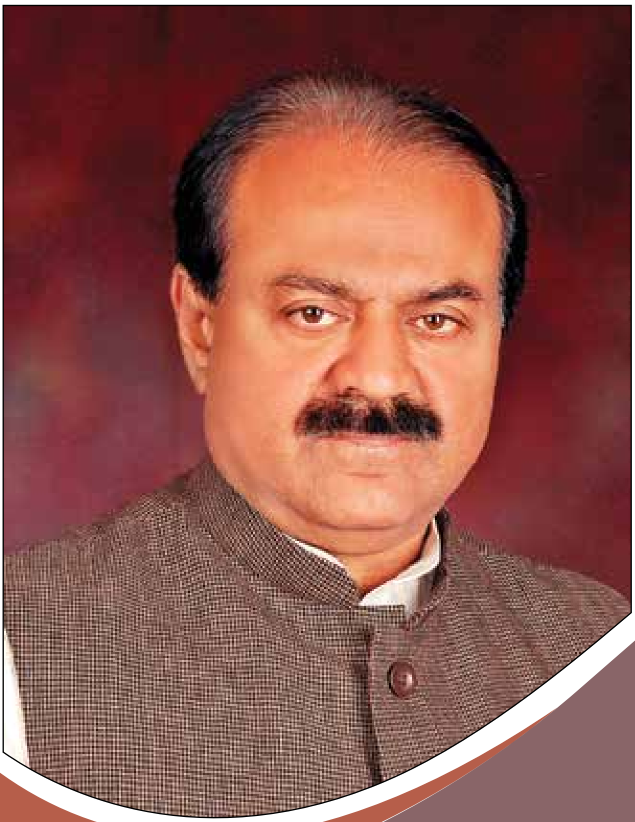

विकास में शानदार तरीके से कार्यरत रहते हैं

सुनील कुमार सिंह

फेम इंडिया मैगज़ीन- एशिया पोस्ट श्रेष्ठ सांसद सर्वे

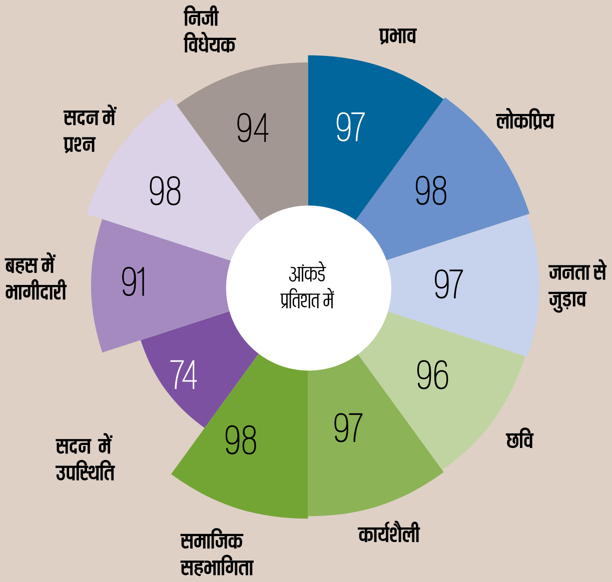

सर्वे स्रोत : विभिन्न प्रश्नों पर संसदीय क्षेत्रों की राय , विधायिका और मीडिया से जुड़े लोगों से स्टेक होल्ड सर्वे और लोकसभा से उपलब्ध डाटा के आधार पर

शानदार

विशेषता -

- जनमानस से सीधा जुड़ाव रखने वाले सांसद
- संसदीय क्षेत्र में चिकित्सा और जन स्वास्थ्य के क्षेत्र में शानदार कार्य
- राजनीति में लंबा संगठनात्मक अनुभव

चतरा से लगातार दूसरी बार लोकसभा सांसद चुने गये सुनील कुमार सिंह की छवि एक ऐसे राजनेता की है जिन्होंने साबित कर दिखाया है कि जनसमर्थन हासिल करने का सबसे बढ़िया फॉर्मूला विकास ही है। झारखंड जैसे जाति-प्रधान राज्य के एक ऐसे लोकसभा क्षेत्र में उन्होंने अपना जनाधार बढ़ाया है।

बिहार के पटना में 10 जनवरी, 1062 को जन्मे सुनील कुमार सिंह पेशे से व्यापारी हैं। उन्होंने मार्केटिंग में एमबीए और समाजशास्त्र में एमए की पढ़ाई की है और भारतीय जनता पार्टी के कई अहम पदों पर रहे हैं। 1977 में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की सदस्यता लेकर छात्र आंदोलन में कूदे और खासे सक्रिय रहे। वे भारतीय जनता युवा मोर्चा से लेकर भारतीय जनता पार्टी तक में कई अहम पदों पर रह चुके हैं। 1995 से 2002 तक भाजयुमो की राष्ट्रीय कार्यसमिति के सदस्य रहे हैं। वर्ष 1987 से 2000 तक वे भाजपा की राष्ट्रीय परिषद के सदस्य रहे और 1996 में वह भाजयुमो, बिहार के प्रदेश उपाध्यक्ष बने। वर्ष 1998 से 2000 तक वह बिहार भाजयुमो के प्रदेश महामंत्री रहे और इसके बाद 2002 में वह भाजयुमो के राष्ट्रीय महामंत्री व 2004 में झारखंड भाजपा के प्रदेश प्रवक्ता बने। वर्ष 2005 से 2007 तक झारखंड भाजपा के प्रदेश महामंत्री रहे। वर्ष 2011 से 2013 तक उन्हें राष्ट्रीय कार्यसमिति मे शामिल किया गया और इस दौरान उन्होंने बिहार, झारखंड और उत्तराखंड में विधानसभा एवं लोकसभा चुनावों में अहम जिम्मेदारियां निभायीं।

सुनील कुमार सिंह भारतीय लोक प्रशासन संस्थान नयी दिल्ली के आजीवन सदस्य हैं और साथ ही इंडियन काउंसिल ऑफ वर्ल्ड अफेयर्स तथा अंतर्राष्ट्रीय सहयोग परिषद के भी सदस्य हैं। स्वयंसेवी संस्थाओं के जरिये उन्होंने झारखंड में दामोदर स्वर्णरेखा एवं अन्य प्रमुख नदियों को प्रदूषण मुक्त कराने के लिये काफी कार्य किया है।

बतौर सांसद सुनील कुमार सिंह ने अपनी कर्मभूमि चतरा के ऐतिहासिक धार्मिक स्थलों जैसे इटखोरी, कौलेश्वरी एवं नगर में महोत्सवों की शुरुआत कर इन्हें पर्यटन के मानचित्र पर एक नया आयाम दिया है। उन्होंने वर्ष 2014 में 1,78,026 मतों के अंतर से कांग्रेस प्रत्याशी धीरज साहू को पराजित किया था जबकि वर्ष 2019 में अपने निकटतम प्रतिद्वंदी मनोज यादव को करीब 3 लाख 78 मतों के अंतर से हराया।

17वीं लोकसभा में पहले दो सत्रों में ही उन्होंने 11 बहसों में सक्रिय भागीदारी की और स्वास्थ्य, आदिवासी कल्याण, कृषकों और युवाओं के कल्याण, पर्यटन, संचार, रेलवे आदि से संबंधित 83 प्रश्न पूछे। उन्होंने बड़ी सरकारी परियोजनाओं को पूरा करने की समय-सीमा तय करने, जनसंख्या नियंत्रण, प्राकृतिक आपदाओं के पीड़ितो की मदद और नदियों के संरक्षण संबंधी चार प्राइवेट मेंबर बिल लाकर खासी प्रशंसा अर्जित की है। उन्हें प्रतिष्ठित प्रिविलेज कमेटि का अध्यक्ष तथा कोयला व इस्पात मामलों की स्टैंडिंग कमेटि का सदस्य बनाया गया है।

बहुमुखी प्रतिभा के धनी सुनील कुमार सिंह राजनीति के साथ-साथ शिक्षा, साहित्य, धर्म, कला, संस्कृति, कृषि एवं ग्रामोद्योग के साथ-साथ यात्रा, प्रकृति एवं पर्यावरण से जुड़े विषयों में गहरी रुचि रखते हैं। उन्होंने मॉरीशस और अमेरिका आदि देशों की यात्राएं की हैं।

फेम इंडिया - एशिया पोस्ट "श्रेष्ठ सांसद सर्वे" में व्यक्तित्व, छवि, जनता से जुड़ाव, कार्यशैली, लोकप्रियता, सदन में उपस्थिति, बहस में हिस्सा, प्राइवेट बिल, सदन में प्रश्न, सांसद निधि का उपयोग व सामाजिक सहभागिता आदि 10 मुख्य मापदंड पर किये गये सर्वे में **सुनील कुमार सिंह**, शानदार कैटगरी में प्रमुख स्थान पर है।

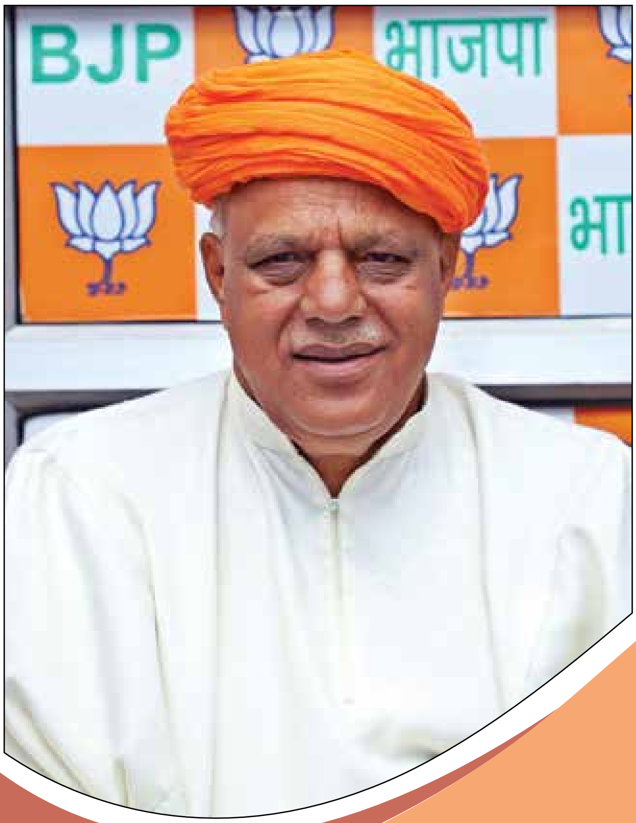

शख्सियत

पक्के इरादे वाली शख्सियत हैं

विरेंद्र सिंह मस्त

फेम इंडिया मैगज़ीन- एशिया पोस्ट श्रेष्ठ सांसद सर्वे

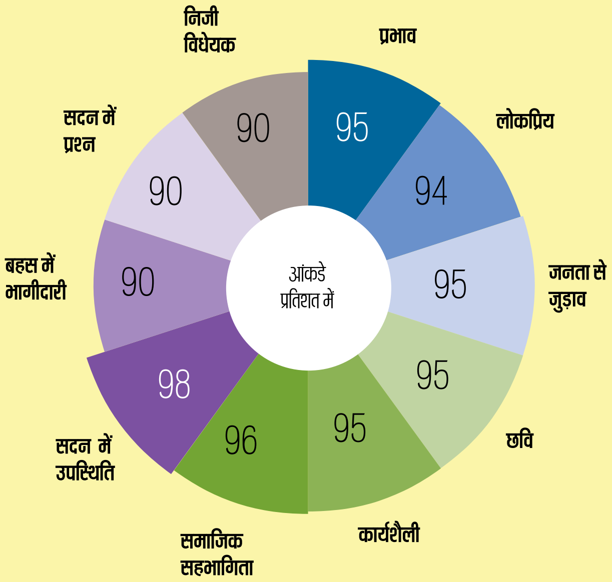

सर्वे स्रोत : विभिन्न प्रश्नों पर संसदीय क्षेत्रों की राय , विधायिका और मीडिया से जुड़े लोगों से स्टेक होल्ड सर्वे और लोकसभा से उपलब्ध डाटा के आधार पर

शख्सियत

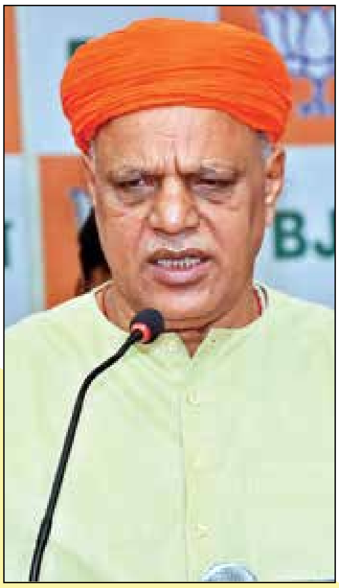

विशेषता -

- राष्ट्रीय स्तर पर मजबूत किसान नेता की छवि
- बेहद लगनशील और किसानों के विकास को प्रतिबद्ध शख्सियत
- जनता को जनार्दन मानने वाले राजनेता

भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ कहे जाने वाले किसानों को उनका सम्मान और हक दिलाने में जो कामयाबी वीरेंद्र सिंह मस्त को मिली है वो उन सभी राजनेताओं के लिये एक पाठ है जो ग्रामीण राजनीति को अपना लक्ष्य मानते हैं। वे वर्तमान में भारतीय जनता पार्टी के किसान मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं। उत्तर प्रदेश के बलिया से वर्तमान सांसद वीरेंद्र सिंह उन राजनेताओं में शामिल हैं जिनकी छवि राज्य में ऐसी है कि वे जहां से भी चुनाव लड़ें विजय होते हैं।

फेम इंडिया - एशिया पोस्ट "श्रेष्ठ सांसद सर्वे" में व्यक्तित्व, छवि, जनता से जुड़ाव, कार्यशैली, लोकप्रियता, सदन में उपस्थिति, बहस में हिस्सा, प्राइवेट बिल, सदन में प्रश्न, सांसद निधि का उपयोग व सामाजिक सहभागिता आदि 10 मुख्य मापदंड पर किये गये सर्वे में **विरेंद्र सिंह मस्त**, **शख्सियत** कैटगरी में प्रमुख स्थान पर है।

बलिया में 21 अक्टूबर 1956 को जन्मे वीरेंद्र सिंह ने अपनी शुरुआती पढ़ाई बलिया में की। उच्च शिक्षा के लिये बनारस हिंदू विश्वविद्यालय गये तो वहां अपनी पढ़ाई के दौरान ही छात्र राजनीति की सक्रिय शुरुआत कर दी थी।

उन्होंने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से ग्रैजुएशन किया है और उन्हें वे छात्र युनियन में खासे सक्रिय रहे और बाद में युवा भाजपा के अध्यक्ष बने। एक माहिर पहलवान रह चुके वीरेंद्र सिंह को उनका उपनाम 'मस्त' कुश्ती के अखाड़े में ही मिला। उनकी छवि एक कुशल राजनेता की है। वे चौथी बार लोकसभा पहुंचे हैं। पहली बार वर्ष 1991 में वे दसवीं लोकसभा के सदस्य निर्वाचित हुए। फिर वर्ष 1998 में बारहवीं लोकसभा के लिये चुने गये। वर्ष 2014 में सोलहवी लोकसभा के लिये भदोही से जीत हासिल कर वे तीसरी बार सांसद बने। सत्रहवीं लोकसभा के लिये वर्ष 2019 में उन्हे बलिया से पार्टी ने आजमाया और चौथी बार जीत हासिल की। उन्हें कृषि की स्टैंडिंग कमेटि में शामिल किया गया है। अबतक सदन में उनकी 98 प्रतिशत उपस्थिति दर्ज हुई है। उन्होंने एक विशेष उल्लेख समेत चार चर्चाओं में हिस्सा लिया है।

किसान मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष वीरेंद्र सिंह ने हाल ही में 'चलो गांवों की ओर' नाम से एक बेहद सफल अभियान चलाया जिसका उद्देश्य किसानों के बीच उन्नत खेती के लिये जागरुकता पैदा करना था। स्वदेशी जागरण मंच के लिये उत्तर प्रदेश के संयोजक के तौर पर उन्होंने राज्य भर में कई कार्यक्रमों का आयोजन किया। वे वनवासी कल्याण मंच से भी जुड़े हैं और उनके लिये भी कई अभियान चला चुके हैं।

वीरेंद्र सिंह मस्त ने सरकार से किसानों के हित में कई महत्त्वपूर्ण फैसले करवाये हैं जिनकी बदौलत ग्रामीण भारत में इनकी लोकप्रियता काफी बढ़ी है। राष्ट्रीय अध्यक्ष के तौर पर

भारतीय जनता पार्टी किसान मोर्चा ने इनके कार्यकाल में ऐसी छवि बनायी है कि इसकी चर्चा देश भर में होने लगी है।

वीरेंद्र सिंह के प्रयासों से उनके पिछले संसदीय क्षेत्र भदोही में एक अंतरराष्ट्रीय एक्सपोर्ट जोन का भी निर्माण हो रहा है जो इलाके के 10 हजार करोड़ के सालाना कारोबार वाले कालीन उद्योग को भी नया आयाम दे रहा है। इन्हे कुश्ती के अलावे घुड़सवारी व तैराकी का भी खासा शौक है। वे चीन समेत कई देशों की यात्राएं कर चुके हैं। ग्रामीण खेलों को बढ़ावा देना उनके प्रमुख कार्यों में शामिल रहा है।

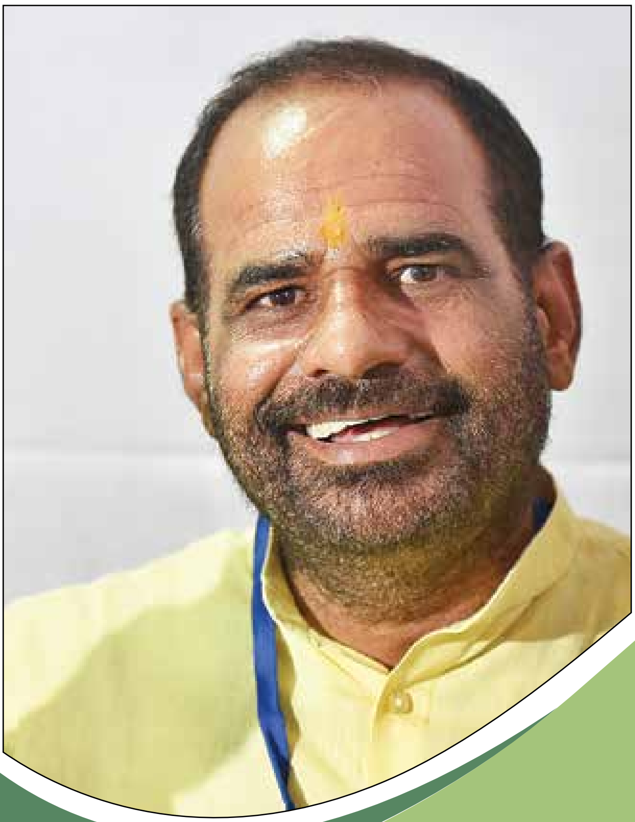

कर्मठता और समर्पण से बड़ा मुकाम बनाया

रमेश बिधूड़ी

फेम इंडिया मैगज़ीन- एशिया पोस्ट श्रेष्ठ सांसद सर्वे

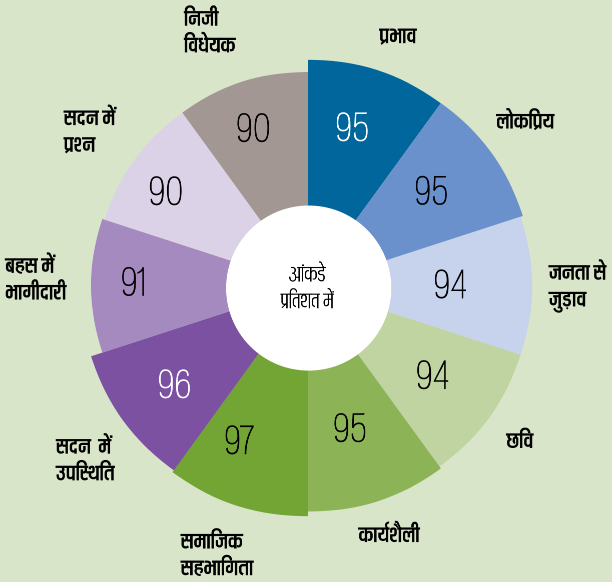

सर्वे स्रोत : विभिन्न प्रश्नों पर संसदीय क्षेत्रों की राय , विधायिका और मीडिया से जुड़े लोगों से स्टेक होल्ड सर्वे और लोकसभा से उपलब्ध डाटा के आधार पर

कर्मठ

रमेश बिधूड़ी का जन्म 18 जुलाई 1961 को दिल्ली के तुगलकाबाद गांव में एक जमींदार किसान परिवार में हुआ था। उन्होंने अपनी पढ़ाई दक्षिण दिल्ली के कालका जी सरकारी स्कूल में की। बीकॉम की पढ़ाई के लिये उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय के शहीद भगत सिंह कॉलेज में दाखिला लिया। बचपन से ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शाखाओं में जाने वाले रमेश ने आगे चलकर अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद से राजनीति की शुरूआत की और शहीद भगत सिंह कॉलेज के सेंट्रल काउंसिलर चुने गये जिससे उन्हें विश्वविद्यालय की एक्जीक्युटिव काउंसिल में बैठने का मौका मिला। उन्होंने वकालत की डिग्री भी हासिल की और दिल्ली हाईकोर्ट के वकील भी बने और क्रशर का कारोबार भी किया।

रमेश बिधूड़ी को समाजसेवा का जज्बा विरासत में मिला है। तुगलकाबाद इलाके में सरकारी स्कूल, सरकारी अस्पताल और आर्यसमाज मंदिर उनके पुरखों से मिली दान की जमीन पर ही बने हैं। उनका परिवार हमेशा लोगों की मदद के लिये तत्पर रहा है। उनके पिता स्व. रामरिख तुगलकाबाद के प्रख्यात समाजसेवी थे। रमेश बिधूड़ी को प्रदेश भाजपा के मुखर और बड़े जन-समर्थन वाले नेताओं में गिना जाता है। वर्ष 1993 से वे प्रदेश भाजपा की महरौली जिला इकाई में कई महत्त्वपूर्ण पदों पर रहे और वर्ष 1997 से 2003 तक इसके अध्यक्ष भी रहे। 1996 में वे धर्मयात्रा महासंघ के प्रदेश सचिव भी बने। वर्ष 2003 से 2008 तक वे प्रदेश भाजपा के उपाध्यक्ष भी रहे। लोकसभा में भाग्य आजमाने से पहले वर्ष 2003 से 2014 तक लगातार तीन बार दिल्ली विधानसभा के सदस्य चुने गये। उनकी गिनती दिल्ली के सबसे सक्रिय और तेज-तर्रार विधायकों में होती थी। प्रदेश भाजपा में वे वर्ष 2008 से अबतक लगातार महासचिव बने रहे हैं।

रमेश बिधूड़ी देश के उन चंद गिने-चुने नेताओं में से हैं जिनकी लोकप्रियता लगातार बढ़ती रही है। वर्ष 2014 में सोलहवीं लोकसभा चुनाव में उन्हें भारी जन-समर्थन मिला और 45% वोट के साथ सांसद बने, जबकि वर्ष 2019 में वोटों का आंकड़ा बढ़ कर 56.6% हो गया और वे दोबारा चुन लिये गये। वर्ष 2019 के जुलाई में उन्हें पिछड़ी जाति की लोकसभा समिति का सदस्य बनाया गया जबकि सितंबर में प्रतिष्ठित पेट्रोलियम व प्राकृतिक गैस मामलों की संसदीय समिति का अध्यक्ष चुना गया है।

रमेश बिधूड़ी बहुआयामी प्रतिभा के धनी हैं और खेलकूद के शौकीन भी। कॉलेज के दिनों में वे क्रिकेट में बेस्ट गेंदबाज का खिताब जीत चुके हैं और आज भी क्षेत्र में खेल-कूद प्रतियोगिताएं आयोजित करवाते हैं। वे शिव आसरा नाम की स्वयंसेवी संस्था के भी अध्यक्ष हैं जो समाज में धार्मिक व सांस्कृतिक गतिविधियों में काफी सक्रिय है।

विशेषता -

- दिल्ली की राजनीति में अहम स्थान
- मजबूत व्यक्तित्व के राजनेता
- संसदीय क्षेत्र की जनता से सीधा जुड़ाव

राजधानी की चमक-दमक वाली संस्कृति के बीच भी अपने ठेठ गंवई अंदाज में लोकप्रियता के नये आयाम गढ़ने वाले राजनेता रमेश बिधूड़ी दक्षिणी दिल्ली के लोकसभा सांसद हैं। वैसे तो वे स्थानीय गुर्जर समुदाय से हैं, लेकिन उन्हें हर जाति-धर्म और आयु वर्ग के लोगों का स्नेह व समर्थन प्राप्त है। उनके चाहने वालों के मुताबिक बिधूड़ी ने सबकी खुले दिल से मदद की है और कभी किसी की सहायता करने में भेदभाव नहीं किया।

फेम इंडिया - एशिया पोस्ट "श्रेष्ठ सांसद सर्वे" में व्यक्तित्व, छवि, जनता से जुड़ाव, कार्यशैली, लोकप्रियता, सदन में उपस्थिति, बहस में हिस्सा, प्राइवेट बिल, सदन में प्रश्न, सांसद निधि का उपयोग व सामाजिक सहभागिता आदि 10 मुख्य मापदंड पर किये गये सर्वे में **रमेश बिधूड़ी**, कर्मठ कैटगरी में प्रमुख स्थान पर है।

FAME INDIA

जिम्मेदार

जिम्मेदारी से संसदीय परंपरा का निभा रही हैं

रमा देवी

फेम इंडिया मैगज़ीन- एशिया पोस्ट श्रेष्ठ सांसद सर्वे

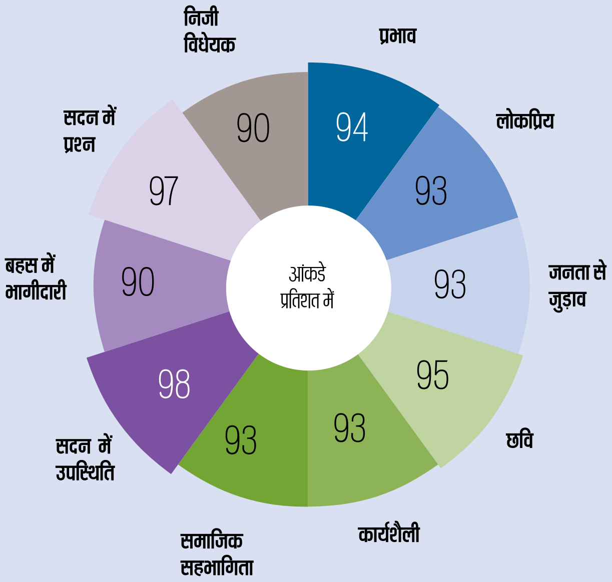

सर्वे स्रोत : विभिन्न प्रश्नों पर संसदीय क्षेत्रों की राय , विधायिका और मीडिया से जुड़े लोगों से स्टेक होल्ड सर्वे और लोकसभा से उपलब्ध डाटा के आधार पर

जिम्मेदार

विशेषता -

- संसदीय क्षेत्र में विकास को प्रतिबद्ध सांसद
- एक जिम्मेदार राजनेता की छवि
- लंबा संसदीय कार्यकाल

दो दशक से बिहार की बेहतरीन सांसदों में शुमार और लगातार तीन बार लोकसभा के लिये चुनी जाने वाली प्रदेश की इकलौती महिला होने का गौरव हासिल करने वाली एक घरेलू महिला की छवि वाली रमा देवी भले ही साधारण दिखें, लेकिन अपनी योग्यता, कार्य कुशलता और इस कारण मिलने वाली लोकप्रियता में वे वाकई असाधारण हैं।

वैशाली के लालगंज में 5 मई 1949 को जन्मी रमा देवी का विवाह शिवहर के राजनीतिक परिवार में राष्ट्रीय जनता दल के जाने-माने राजनेता और लालू प्रसाद कैबिनेट में मंत्री रहे ब्रज बिहारी प्रसाद से हुआ। रमा देवी को राजनीति में उनके पति ने ही उतारा था और 12वीं लोकसभा में उन्हें मोतिहारी से चुनाव लड़वाया। इस चुनाव में रमा देवी ने कद्दावर नेता राधामोहन सिंह को हराया। कुछ ही महीनों बाद ब्रज बिहारी प्रसाद की पटना के इंदिरा गांधी इंस्टीट्यूट ऑफ़ मेडिकल साइंस परिसर में हत्या कर दी गयी। वे उस समय इलाज के लिये वहां भर्ती थे।

इसके बाद रमा देवी अपने पति की विरासत संभालते हुए शिवहर से विधायक बनीं और राबड़ी देवी के मंत्रिमंडल में शामिल हुई।

ये बहुत कम लोग जानते हैं कि साल 2009 में मोतिहारी से मौजूदा सांसद राधा मोहन सिंह ने उन्हें भारतीय जनता पार्टी में शामिल होने का न्यौता दिया और शिवहर से टिकट दिलवाया। वे एनडीए के प्रत्याशी के रूप में चुनाव जीतीं और तब से अब तक नहीं हारीं। उन्होंने अपने क्षेत्र में विकास की ऐसी बयार बहायी है जो कई मामलों में अतुलनीय है। कहते हैं उनके इलाके में कई सुविधाएं ऐसी हैं जो राजधानी पटना से भी बेहतर हैं। कानून और अर्थशास्त्र की शिक्षा प्राप्त रमा देवी की छवि एक मददगार और लोकप्रिय राजनेता की रही है। कहते हैं कि उनके दिल्ली और शिवहर स्थित आवास पर आया कोई भी जरूरतमंद खाली हाथ नहीं लौटता।

रमा देवी संसदीय मर्यादा का निर्वहन करने में एक आदर्श स्थापित करने वाली देश की पहली महिला राजनेता हैं। एक तरफ जहां पिछले कुछ वर्षों से प्रदेश और देश भर के सांसदों की संसद में औसत उपस्थिति 85 से 87 प्रतिशत के आसपास रहती है वहीं रमा देवी की उपस्थिति 99 से 100 प्रतिशत रही है। सदन में प्रश्न पूछने और चर्चाओं में भागीदारी के मामले में भी वे अव्वल रहने वाले सदस्यों में से हैं।

रमा देवी जून में लोकसभा के पीठासीन अध्यक्षों के पैनल में सम्मिलित की गयीं। उन्हें संसद की सामाजिक न्याय व अधिकारिता संबंधी स्थायी समिति का अध्यक्ष और सामान्य मामलों की स्थायी समिति का सदस्य बनाया गया है। वर्तमान लोकसभा में उन्होंने चार विशेष उल्लेख समेत दस चर्चाओं में सक्रिय भागीदारी की है। उन्होंने महिला एवं बाल विकास, पर्यावरण, सड़क परिवहन, पेट्रोलियम आदि कई मुद्दों पर 74 महत्त्वपूर्ण प्रश्न पूछे हैं।

फेम इंडिया - एशिया पोस्ट "श्रेष्ठ सांसद सर्वे" में व्यक्तित्व, छवि, जनता से जुड़ाव, कार्यशैली, लोकप्रियता, सदन में उपस्थिति, बहस में हिस्सा, प्राइवेट बिल, सदन में प्रश्न, सांसद निधि का उपयोग व सामाजिक सहभागिता आदि 10 मुख्य मापदंड पर किये गये सर्वे में **जिम्मेदार, लोकप्रिय** कैटगरी में प्रमुख स्थान पर है।

शक्ति

नारी शक्ति की मजबूत मिसाल

मीनाक्षी लेखी

फेम इंडिया मैगज़ीन- एशिया पोस्ट श्रेष्ठ सांसद सर्वे

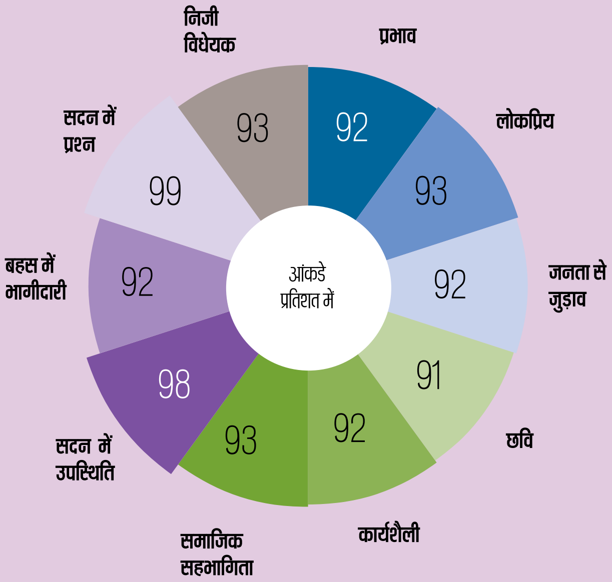

सर्वे स्रोत : विभिन्न प्रश्नों पर संसदीय क्षेत्रों की राय , विधायिका और मीडिया से जुड़े लोगों से स्टेक होल्ड सर्वे और लोकसभा से उपलब्ध डाटा के आधार पर

शक्ति

विशेषता -

- सुलझी हुई वक्ता और राजनेता
- संसदीय परंपरा का बेहतर प्रदर्शन
- महिला सशक्तिकरण को प्रयासरत

कहते हैं कुछ लोगों को विरासत में बड़े नाम के सहारे रहते हैं और कुछ लोग विरासत में मिले नाम को चार चांद लगा देते हैं। ऐसी ही एक शख्सियत हैं मीनाक्षी लेखी, जिन्होंने साधारण परिवार में जन्म लेकर भी अपने साथ जुड़े नाम को एक असाधारण ऊंचाई पर पहुंचाया है।

नयी दिल्ली की प्रतिष्ठित लोकसभा सीट से लगातार दो बार भारतीय जनता पार्टी के टिकट पर सांसद चुनी गयी मीनाक्षी लेखी की गिनती देश की सक्रिय राजनेताओं में होती है और वे अपने क्षेत्र के निवासियों से बहुत करीब से जुड़ी हुई हैं। उन्हें भाजपा के प्रगतिशील और बहुमुखी चेहरे के रूप में जाना जाता है। वे पार्टी की राष्ट्रीय प्रवक्ता भी हैं।

मीनाक्षी का जन्म 30 अप्रैल 1967 को नयी दिल्ली के एक मध्यम वर्ग के परिवार में हुआ था। उनके पिता भगवान खन्ना और माता अमरलता खन्ना थीं। उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रतिष्ठित हिंदू कॉलेज से वनस्पति विज्ञान में बीएससी की डिग्री हासिल की और इसके बाद कानून में एलएलबी भी किया। उन्होंने 1990 में दिल्ली बार काउंसिल में पंजीकरण करवाया और सुप्रीम कोर्ट, हाई कोर्ट व ट्राइब्युनल आदि की अदालतों में प्रैक्टिस करती थीं। वे सुप्रीम कोर्ट बार काउंसिल के चुनावों में खासी सक्रिय रहती थीं और एक प्रचार अभियान में उनकी मुलाकात प्रख्यात वकील प्राण नाथ लेखी के पुत्र अमन लेखी से हुई जिनसे बाद में उनकी शादी हो गयी। उन्होंने वकालत के साथ-साथ समाजसेवा के क्षेत्र में भी अपनी पहचान बनायी और राष्ट्रीय महिला आयोग, साक्षी, एनआईपीसीडी और ऐसी कई संस्थाओं से जुड़ीं और महिलाओं की एक सशक्त आवाज के तौर पर पहचानी जाने लगीं।

मीनाक्षी लेखी भारतीय जनता पार्टी की सक्रिय सदस्य रहीं हैं और वर्ष 2010 में भाजपा महिला मोर्चा की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष भी बनीं। वर्ष 2014 में पार्टी ने उन्हें नयी दिल्ली सीट से कांग्रेसी सांसद अजय माकन के खिलाफ टिकट दिया। उन्हें जोरदार जीत हासिल हुई और क्षेत्र में उनकी सेवा व कार्यों को देखते हुए जनता ने उन्हें दोबारा वर्ष 2019 के चुनाव में भी विजयी बनाया।

बतौर सांसद उन्होंने पहले दो सत्रों में संसदीय परंपरा को शानदार ढंग से निभाया। उन्होंने सदन में 19 बहसों और 6 विशेष उल्लेख की चर्चाओं में भागीदारी की। वे पर्यावरण, प्रशासन, कोयला, सड़क निर्माण और स्वास्थ्य आदि से जुडे 90 प्रश्न पूछ चुकी हैं। सदन में उनकी उपस्थिति 98 प्रतिशत रही है। उन्होंने तीन सरकारी बिल सदन के पटल पर रखे। उन्हें सार्वजनिक उपक्रमों पर बनी संसदीय कमेटि का अध्यक्ष और सुविधा, जेनरल परपस और विदेश मंत्रालय संबंधी तीनों संसदीय कमेटियों का सदस्य बनाया गया है।

मीनाक्षी लेखी न सिर्फ एक उच्च कोटि की वकील हैं बल्कि अच्छी वक्ता और पत्रकार भी हैं। वे साप्ताहिक पत्रिका, 'फोर्थराइट' में अभी भी एक पाक्षिक कॉलम लिखती हैं। टेलीविज़न पर आयोजित होने वाली बहसों में और समाचार पत्रों के विभिन्न आलेखों में उन्होंने कई मुद्दों पर बहस की है। वे विभिन्न मंत्रालयों के साथ एनएचआरसी और लिंग प्रशिक्षण कार्यक्रमों में विभिन्न व्याख्यान भी ले रही है।

फेम इंडिया - एशिया पोस्ट "श्रेष्ठ सांसद सर्वे" में व्यक्तित्व, छवि, जनता से जुड़ाव, कार्यशैली, लोकप्रियता, सदन में उपस्थिति, बहस में हिस्सा, प्राइवेट बिल, सदन में प्रश्न, सांसद निधि का उपयोग व सामाजिक सहभागिता आदि 10 मुख्य मापदंड पर किये गये सर्वे में **मीनाक्षी लेखी**, शक्ति कैटगरी में प्रमुख स्थान पर है।

FAME INDIA

शालिनता और विकासवादी सोच से परिपूर्ण है युवा सांसद

डॉ प्रीतम मुंडे

फेम इंडिया मैगज़ीन- एशिया पोस्ट श्रेष्ठ सांसद सर्वे

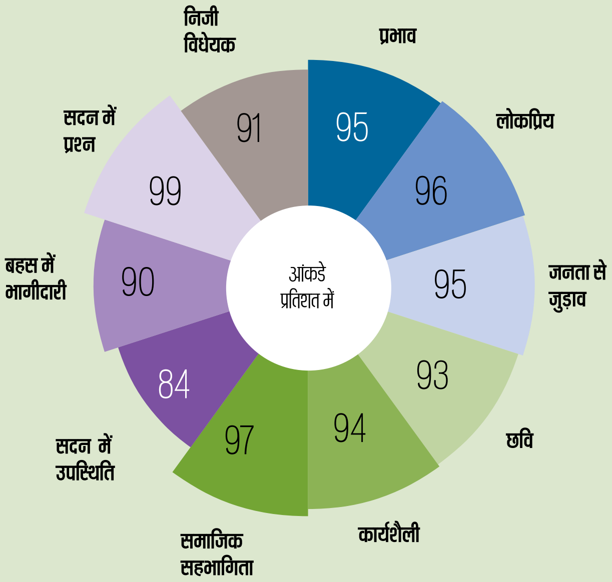

सर्वे स्रोत : विभिन्न प्रश्नों पर संसदीय क्षेत्रों की राय , विधायिका और मीडिया से जुड़े लोगों से स्टेक होल्ड सर्वे और लोकसभा से उपलब्ध डाटा के आधार पर

युवा

विशेषता -

- शालिनता और कुशलता से भरपूर युवा राजनेता
- संसदीय क्षेत्र से बेहतर जुड़ाव
- क्षेत्र में विकास के लिए सदैव सक्रिय

कहते हैं युवा नेतृत्व से राजनीति की दशा और दिशा बदल सकती है और विषम परिस्थितियों में निर्णय लेने की क्षमता युवा वर्ग की पहचान कराती है। कुछ ऐसी ही पहचान बनायी है बीड की युवा सांसद डॉ. प्रीतम मुंडे ने।

प्रीतम का जन्म 17 फरवरी 1983 को हुआ। उनका पूरा परिवार राजनीति से जुड़ा हुआ है। उनके पिता स्वर्गीय गोपीनाथ मुंडे महाराष्ट्र के बड़े नेताओं में शुमार रहे और निधन से पूर्व केंद्रीय ग्रामीण विकास, पेयजल और पंचायती राज आदि विभागों के कैबिनेट मंत्री भी थे। उनकी बड़ी बहन पंकजा मुंडे भी राजनीति में सक्रिय रहती हैं। स्वर्गीय प्रमोद महाजन की भतीजी हैं और राहुल महाजन व पूर्व सांसद पूनम महाजन की रिश्ते की बहन। एनसीपी नेता धनंजय मुंडे नेता भी प्रीतम के चचेरे भाई हैं। मुंडे परिवार में सबसे उच्च शिक्षा प्राप्त प्रीतम ने नवी मुंबई के डी वाई पाटिल इंस्टीच्यूट से अपनी डॉक्टरी की पढ़ाई पूरी की और एमबीबीएस करने के बाद डर्मिटोलॉजी में एमडी किया। 2012 में उन्हें उनके पिता गोपीनाथ मुंडे ने सोलापुर में एक मेडिकल कॉलेज का निदेशक बना दिया था। 2009 में प्रीतम की शादी नासिक के रहने वाले गौरव खाडे से हुई, जो कि आईटी प्रोफेशनल हैं।

पिता गोपीनाथ मुंडे के सड़क हादसे में निधन के बाद उनकी संसदीय सीट बीड से वर्ष 2014 में 16वीं लोकसभा के लिये डॉ. प्रीतम मुंडे उपचुनाव के जरिये मैदान में उतरी थीं। उनके खिलाफ शिवसेना और एनसीपी ने कोई प्रत्याशी नहीं उतारा था। डॉ. प्रीतम ने अपने निकटतम प्रतिद्वंदी कांग्रेस के अशोक एस पाटिल को 6,96,321 वोटों से मात दिया था। भारतीय चुनाव के इतिहास में यह सबसे अधिक मार्जिन से जीत थी। इसके कुछ ही दिनों बाद उनकी बड़ी बहन पंकजा मुंडे परली विधानसभा सीट से चुनाव जीत कर विधानसभा पहुंची और महाराष्ट्र सरकार में कैबिनेट मंत्री बनीं। प्रीतम स्वभाव से शर्मीली हैं और लाइमलाइट से दूर रहना पसंद करती हैं। वर्ष 2019 में 17वीं लोकसभा के चुनाव में भी डॉ. प्रीतम मुंडे ही जीतकर सांसद बनी। वे काफी सहृदय और मददगार किस्म की राजनेता हैं और अपने क्षेत्र की ही नहीं, पूरे देश के लोगों की निःस्वार्थ भाव से मदद करती हैं।

17वीं लोकसभा के छोटे से अंतराल में ही प्रीतम मुंडे ने सदन में सक्रियता दिखाते हुए 91 प्रश्न व तीन पूरक प्रश्न पूछे हैं। ये प्रश्न मुख्यतः उद्योग, रोजगार, रेलवे, स्वास्थ्य और वस्त्र उद्योग आदि विषयों से संबंधित हैं जिनसे उनके क्षेत्र और आस-पास की जनता को वास्ता पड़ता है। उन्होंने एक सरकारी बिल भी पेश किया है और कुल 4 बहसों व दो विशेष उल्लेख की चर्चाओं में शामिल रही हैं। दोनों सत्रों को मिलाकर सदन में उनकी उपस्थिति 84 प्रतिशत रही है। उन्हें अन्य पिछड़ा वर्ग के कल्याण की संसदीय समिति और स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण की स्टैंडिंग कमेटि का सदस्य बनाया गया है।

फेम इंडिया - एशिया पोस्ट "श्रेष्ठ सांसद सर्वे" में व्यक्तित्व, छवि, जनता से जुड़ाव, कार्यशैली, लोकप्रियता, सदन में उपस्थिति, बहस में हिस्सा, प्राइवेट बिल, सदन में प्रश्न, सांसद निधि का उपयोग व सामाजिक सहभागिता आदि 10 मुख्य मापदंड पर किये गये सर्वे में **डॉ प्रीतम मुंडे**, युवा कैटगरी में प्रमुख स्थान पर है।

FAME INDIA

जनहित के मुद्दों को प्रमुखता से उठाने में कामयाब रही है

रीति पाठक

फेम इंडिया मैगज़ीन- एशिया पोस्ट श्रेष्ठ सांसद सर्वे

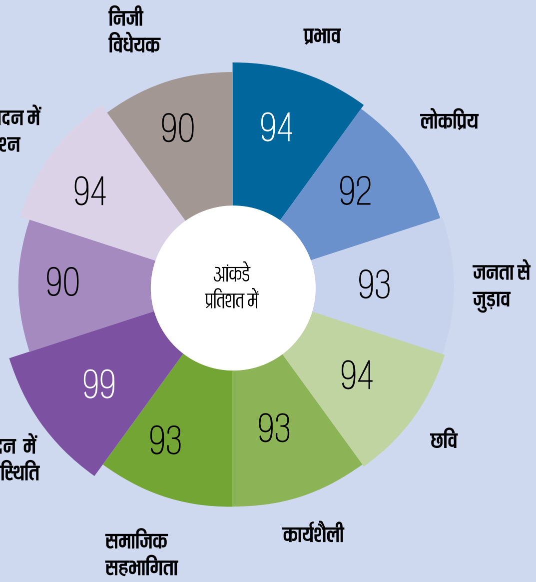

सर्वे स्रोत : विभिन्न प्रश्नों पर संसदीय क्षेत्रों की राय , विधायिका और मीडिया से जुड़े लोगों से स्टेक होल्ड सर्वे और लोकसभा से उपलब्ध डाटा के आधार पर

कामयाब

विशेषता -

- संसदीय क्षेत्र में विकास की गति बनाए रखने में कामयाब
- जमीनी स्तर से राजनीति की शुरुआत
- बेहतर संवाद क्षमता

अगर बुलंद हों हौसले तो आसमां को भी झुकाना है आसान। ये पंक्तियां सटीक बैठती हैं मध्यप्रदेश की सीधी लोकसभा सीट से भाजपा सांसद रीती पाठक की सफलता की कहानी पर। एक साधारण परिवार की इस असाधारण बेटी ने दिखा दिया कि अगर सच्चाई के साथ कोशिश की जाये तो बड़ी से बड़ी मंजिल को हासिल करना संभव है।

फेम इंडिया - एशिया पोस्ट "श्रेष्ठ सांसद सर्वे" में व्यक्तित्व, छवि, जनता से जुड़ाव, कार्यशैली, लोकप्रियता, सदन में उपस्थिति, बहस में हिस्सा, प्राइवेट बिल, सदन में प्रश्न, सांसद निधि का उपयोग व सामाजिक सहभागिता आदि 10 मुख्य मापदंड पर किये गये सर्वे में **रीति पाठक**, **कामयाब** कैटगरी में प्रमुख स्थान पर है।

मध्यप्रदेश के सिंगरौली में 1 जुलाई 1977 को जन्मी रीती के पिता रामकरण देव पांडेय वकील और माता श्यामा पांडेय हाउसवाइफ थीं। वे स्कूल कॉलेज में मेधावी छात्रा थीं और वाद-विवाद प्रतियोगिताओं में अव्वल आती थीं। सन् 1997 में 20 वर्ष की आयु में उनका विवाह सीधी के रजनीश पाठक के साथ हुआ। उनके ससुराल वालों ने उनकी क्षमता को समझा और उन्हें शिक्षा पूरी करने में सहयोग व बढ़ावा दिया।

उनकी उच्च शिक्षा रीवा के अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय से हुई उन्होंने हिंदी और इतिहास में स्नातक और फिर इतिहास में एमए की डिग्री हासिल की। इसके बाद उन्होंने एलएलबी की डिग्री भी पास की और सामाजिक कार्यों में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया।

रीती पाठक ने देखा कि राजनीति के जरिये समाजसेवा में सक्रिय योगदान देना संभव है इसीलिये सीधी जिला पंचायत का चुनाव लड़ा। वे अध्यक्ष पद पर निर्वाचित हुईं और उनकी कार्यक्षमता और सक्रियता को देखते हुए भारतीय जनता पार्टी ने उन्हें वर्ष 2014 के सोलहवीं लोकसभा चुनाव में सीधी सीट से प्रत्याशी बनाया।

हालांकि उनके मुकाबले कांग्रेस के दिग्गज नेता और मौजूदा सांसद इंद्रजीत कुमार खड़े थे, लेकिन इस बात की परवाह किये बिना रीति ने अपना चुनाव प्रचार शुरू किया। वे अपनी योजनाओं और विचारों को लोगों तक पहुंचाने में सफल रहीं। उन्हें एक लाख से भी अधिक वोटों के अंतर से जीत हासिल हुई। वे संसद के सदन और अपने क्षेत्र की सबसे सक्रिय नेताओं में से एक हैं और कई सत्रों में उनकी शत प्रतिशत उपस्थिति रही है। अपने संसदीय क्षेत्र में उन्होंने विकास के कई कार्य करवाये। पार्टी ने उनकी लोकप्रियता को देखते हुए सन् 2019 में हुए सत्रहवीं लोकसभा चुनाव में भी प्रत्याशी बनाया और उन्होंने दोबारा जीत कर अपनी योग्यता साबित की।

बतौर सांसद रीती पाठक की सदन में उपस्थिति 99 प्रतिशत रही है जबकि उन्होंने केंद्रीय बजट, रोजगार, कृषि, अन्त्योदय हरित क्रांति, रेलवे और राजमार्ग से जुड़ी सात बहसों में सक्रिय भागीदारी की है। उन्होंने 47 प्रश्न उठाये हैं जो नागरिक उड्डयन, रेलवे, ग्रामीण विकास, पंचायती राज, टोल प्लाजा आदि से संबंधित हैं। सितंबर 2019 में उन्हें कोयला व इस्पात मंत्रालय की स्टैंडिग कमेटि का सदस्य बनाया गया जबकि अक्टूबर में उन्हें नारी सशक्तिकरण मंत्रालय की स्टैंडिग कमेटि में शामिल किया गया। खास बात यह है कि दोनों ही कमेटियों में वे पिछली लोकसभा के दौरान भी सदस्य रह चुकी हैं।

उन्हें सर्वे में सदन की शालीन और गंभीर सांसद के तौर पर पाया गया है। वे लोकसभा में क्षेत्र और जनकल्याण के मुद्दे उठाती रहती हैं और उनसे जुड़ी बहसों में हिस्सा जरूर लेती हैं। संसद में उपस्थिति से लेकर अपने लोकसभा क्षेत्र के विकास तक के लिये क्रियाशील रहने का हौसला ही इन्हें श्रेष्ठ सांसद की श्रेणी में ला खड़ा करता है। संसदीय क्षेत्र में उनकी छवि अच्छी है। वे जनता से जुड़ी हुई हैं और क्षेत्र में समाजिक सहभागिता बना कर कुशलता-पूर्वक चल रही हैं।

FAME INDIA

जागरूक

संसदीय क्षेत्र के विकास के लिए जागरूक रहती है

पूनमबेन माडम

फेम इंडिया मैगज़ीन- एशिया पोस्ट श्रेष्ठ सांसद सर्वे

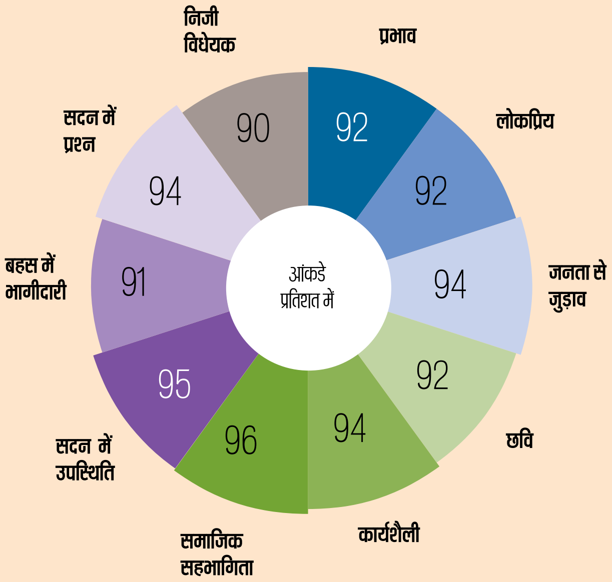

सर्वे स्रोत : विभिन्न प्रश्नों पर संसदीय क्षेत्रों की राय , विधायिका और मीडिया से जुड़े लोगों से स्टेक होल्ड सर्वे और लोकसभा से उपलब्ध डाटा के आधार पर

जागरूक

विशेषता -

- संसदीय क्षेत्र में अच्छा प्रभाव
- लोकसभा में प्रखर वक्ता की छवि
- क्षेत्र में जागरूकता से जुड़े अनेक कार्यक्रम का आयोजन करवाना

एक महान विरासत को आगे बढ़ाकर विस्तृत पटल पर फैलाने की कला कम लोगों में ही होती है। गुजरात की लोकप्रिय सांसद पूनमबेन माडम इसका जीता जागता उदाहरण हैं जिन्होंने अपने पिता की लोकप्रियता को एक नयी पहचान दी।

पूनमबेन माडम का जन्म एक राजनीतिक परिवार में 23 सितंबर 1974 को गुजरात के जामनगर में हुआ था। उनके पुरखे अहीर समुदाय से थे और उत्तर प्रदेश से गुजरात के खंभालिया में जाकर बस गये थे। खंभालिया भगवान श्रीकृष्ण की नगरी द्वारका का ही एक इलाका है जहां अहीर समुदाय का खासा बोलबाला है। पूनम के दादा ने इलाके में शिक्षा की अलख जगायी थी इस वजह से उनके पिता हेमतभाई माडम को इलाके में काफी लोकप्रियता हासिल थी। इसका अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि वर्ष 1972 से 1990 के बीच खंभालिया के चार बार विधायक रहे, वो भी निर्दलीय। पूनम की शिक्षा-दीक्षा गुजरात में ही हुई और उन्होंने गुजरात विश्वविद्यालय से बी कॉम किया। उनकी शादी डिफेंस अधिकारी परमिंदर महाजन से हुई और उसके बाद वे दिल्ली में रहने लगीं। वर्ष 2009 तक वो दिल्ली में ही रहीं। लेकिन बाद में अपने पिता की राजनीतिक विरासत संभालने के लिये खंभालिया आ गयीं।

पूनम माडम के राजनीतिक सफर की कहानी किसी हिन्दी फिल्म की कहानी से कम नहीं है। चाचा विक्रम माडम कांग्रेस के बड़े नेता हैं और जामनगर से कांग्रेस के सांसद भी रह चुके हैं। कहते हैं पूनम माडम के राजनीति में उतरने से विक्रम माडम खुश नहीं थे और जब वर्ष 2012 में गुजरात विधानसभा के चुनाव में कांग्रेस खंभालिया सीट पर पूनम को उतारने की तैयारी में थी तब उनके चाचा ने हेभा भाई कुमार की उम्मीदवारी के लिये लॉबिंग कर डाली। पूनम ने भाजपा के टिकट पर वहां से चुनाव लड़ा और जीत भी गयीं। वर्ष 2014 में 16वीं लोकसभा के चुनाव हुए तो बीजेपी ने जामनगर सीट पर पूनम माडम को टिकट दिया और उन्होंने अपने उसी चाचा को हरा दिया जिन्होंने उनके खिलाफ लॉबींग की थी। वर्ष 2019 में 17वीं लोकसभा के चुनाव में भी उन्हें जोरदार जीत मिली।

संसदीय परंपरा में पूनम माड़म को पूरा भरोसा है और वे गंभीर सासंदों में गिनी जाती हैं। उन्होंने प्रारंभिक दो सत्रों में उनकी उपस्थिति 95 प्रतिशत रही है और उन्होंने वस्त्र उद्योग, बंदरगाहों की स्थिति, रक्षा, कृषि और स्वास्थ्य आदि विषयों से संबंधित 41 प्रश्न पूछे। उन्होंने पांच बहसों में सक्रिय भागीदारी निभायी जबकि उन्हें सार्वजनिक उपक्रमों और नारी सशक्तिकरण के संसदीय कमेटि का सदस्य बनाया गया है।

पूनम माडम कई स्वयंसेवी संस्थाओं से जुड़ी हैं और सामाजिक तौर पर काफी सक्रिय हैं। वे अहीर कन्या छात्रालय और अहीर-यादव सेवा समाज, द्वारका की ट्रस्टी हैं। साथ ही वे अपने परिवार के नाम पर चलने वाले एच आर ट्रस्ट की अध्यक्ष रही हैं और इसके माध्यम से इलाके में खेलकूद, स्वास्थ्य व शिक्षा के क्षेत्र में जागरुकता फैलाती हैं। वे दुनिया के कई देशों की यात्रा कर चुकी हैं और हिन्दी व अंग्रेजी दोनों ही भाषाओं की अच्छी वक्ता हैं।

फेम इंडिया - एशिया पोस्ट "श्रेष्ठ सांसद सर्वे" में व्यक्तित्व, छवि, जनता से जुड़ाव, कार्यशैली, लोकप्रियता, सदन में उपस्थिति, बहस में हिस्सा, प्राइवेट बिल, सदन में प्रश्न, सांसद निधि का उपयोग व सामाजिक सहभागिता आदि 10 मुख्य मापदंड पर किये गये सर्वे में **पूनमबेन माडम**, जागरूक कैटगरी में प्रमुख स्थान पर है।

अनुभवी

संसदीय और संगठनात्मक कार्यो का लंबा अनुभव रखते हैं

राकेश सिंह

FAME INDIA

फेम इंडिया मैगज़ीन- एशिया पोस्ट
श्रेष्ठ सांसद सर्वे

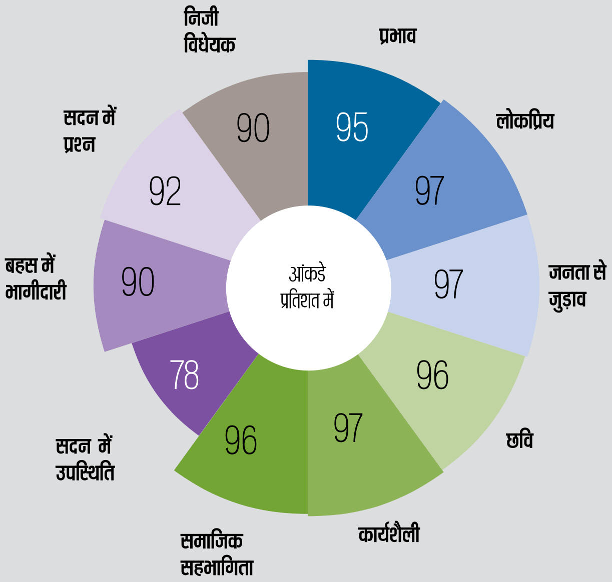

अनुभवी

विशेषता -

- मध्य प्रदेश की राजनीति के प्रमुख राजनेताओं में शुमार
- बेहतर कार्ययोजना बनाने में माहिर शख्सियत की छवि
- जमीनी स्तर तक जुड़ाव रखने वाले व्यक्ति

मिट्टी से जुड़े और जनसाधारण की नब्ज पर पकड़ रखने वाले राकेश सिंह भारतीय लोकतंत्र की शक्ति का जीता जागता उदाहरण हैं। उन्होंने साबित कर दिखाया है कि हमारा लोकतंत्र हर आम और खास को आगे बढ़ने के समान अवसर प्रदान करता है। साधारण से साधारण व्यक्ति भी धरातल से आसमान की ऊंचाइयों तक महज अपनी कोशिशों के दम पर पहुंच सकता है।

मध्यप्रदेश के जबलपुर में 4 जून 1962 को जन्मे राकेश सिंह की प्रारंभिक शिक्षा शहर के गवर्नमेंट स्कूल और साइंस कॉलेज में हुई। राजनीति और सामाजिक गतिविधियों में कॉलेज के दिनों से ही गहरी रुचि थी और वर्ष 1978 में फर्स्ट इयर के दौरान ही कार्यकारिणी सदस्य चुन लिये गये। अगले साल कॉलेज की तरफ से विश्वविद्यालय प्रतिनिधि बने। जब पढ़ाई पूरी कर लकड़ी के कारोबार में उतरे तो टिंबर मर्चेंट एसोशिएसन की कार्यकारिणी में रिकॉर्ड मतों से चुने गये। भरतीय जनता पार्टी के सक्रिय कार्यकर्ता के तौर पर उन्हें 1994 और 1999 के विधानसभा चुनावों में बरगी सीट का पार्टी संचालक बनाया गया। कम लोगों को मालूम है कि कभी भाजपा का राष्ट्रव्यापी अभियान बना नारा “गांव चलो, घर चलो” राकेश सिंह के नेतृत्त्व में ही पार्टी की जबलपुर जिला ग्रामीण इकाई ने शुरू किया था।

वर्ष 2004 में राकेश सिंह पहली बार जबलपुर से भाजपा उम्मीदवार के तौर पर चुनाव जीतकर 14वीं लोकसभा के सदस्य बने। हालांकि तब केंद्र में यूपीए की सरकार थी, फिर भी उनके द्वारा किये गये कार्यों और क्षेत्र के सबल प्रतिनिधित्व के कारण जबलपुर की जनता का विश्वास इतना जमा कि तब से लगातार चार बार सांसद बनाया है। खास बात यह है कि उन्हें मिलने वाले वोटों की संख्या में लगातार बढ़ोत्तरी हुई है। पार्टी ने उन्हें वर्ष 2010 में प्रदेश महामंत्री फिर वर्ष 2018 में प्रदेश अध्यक्ष बनाया है।

उनका प्रयास हवाई सेवा तथा रेलवे के माध्यम से जबलपुर को बड़े महानगरों के साथ जोड़ने का था, जिसमें अच्छी सफलता भी मिली और जबलपुर पहली बार दिल्ली और मुंबई से नियमित दैनिक वायु सेवा से जुड़ा। इसी के साथ पर्यटन आधारित उद्योगों को बढ़ावा देने का प्रयास भी रंग लाया। आज कृषि आधारित उद्योगों के लिये जबलपुर एक सुलभ स्थान है।

17वीं लोकसभा के अबतक के छोटे से कार्यकाल के दौरान भी सदन मेंउनकी सक्रियता काफी रही। उन्होंने 7 बहसों में सक्रिय भागीदारी की है और जलशक्ति, नागरिक उड्डयन, कृषि और रेलवे आदि से संबंधित 25 प्रश्न पूछे हैं। सदन में उनकी उपस्थिति 78 प्रतिशत रही। वे संसद की कोयला व इस्पात कमेटि के अध्यक्ष बनाये गये हैं जबकि जेनरल परपस कमेटि तथा बिजनेस एडवाइजरी की संसदीय कमेटि के सदस्य हैं।

फेम इंडिया - एशिया पोस्ट “श्रेष्ठ सांसद सर्वे” में व्यक्तित्व, छवि, जनता से जुड़ाव, कार्यशैली, लोकप्रियता, सदन में उपस्थिति, बहस में हिस्सा, प्राइवेट बिल, सदन में प्रश्न, सांसद निधि का उपयोग व सामाजिक सहभागिता आदि 10 मुख्य मापदंड पर किये गये सर्वे में **राकेश सिंह**, **अनुभवी** कैटगरी में प्रमुख स्थान पर है।

लगनशील

जनता की उम्मीदों पर सदैव खरे उतरे हैं लगनशील

रमेश चंद्र कौशिक

फेम इंडिया मैगज़ीन- एशिया पोस्ट श्रेष्ठ सांसद सर्वे

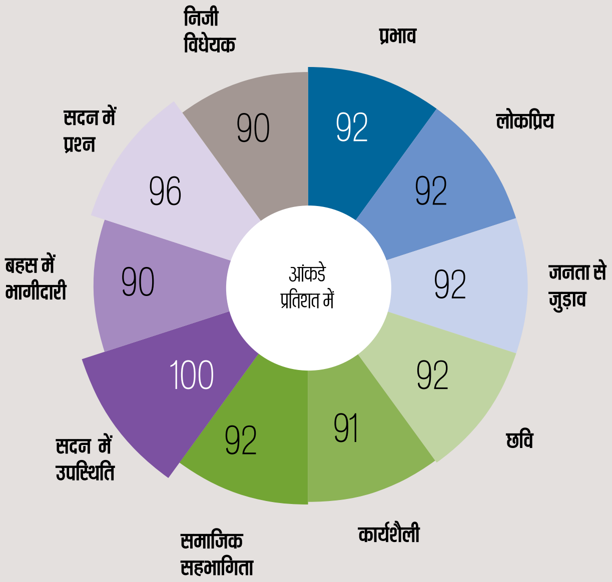

सर्वे स्रोत : विभिन्न प्रश्नों पर संसदीय क्षेत्रों की राय , विधायिका और मीडिया से जुड़े लोगों से स्टेक होल्ड सर्वे और लोकसभा से उपलब्ध डाटा के आधार पर

लगनशील

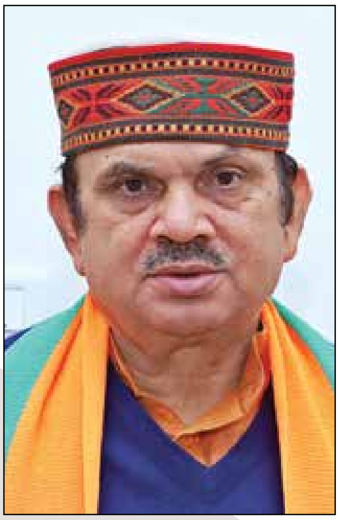

विशेषता -

- हरियाणा के मजबूत ब्राह्मण राजनेता
- क्षेत्र में जनता से सीधा जुड़ाव और विकास को प्रतिबद्ध
- सरल , सहज और व्यवस्थित छवि

17वीं लोकसभा में दूसरी बार चुन कर सांसद बने रमेश चंद्र कौशिक हरियाणा की सोनीपत सीट का प्रतिनिधित्व करते हैं। उन्होंने 17वीं लोकसभा का यह चुनाव हरियाणा के दिग्गज राजनेता भुपेंद्र सिंह हुड्डा को हरा कर जीता है, इनकी लोकप्रियता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि सोनीपत जाट बहुल क्षेत्र है और वहां हुड्डा को हराना किसी असंभव से कम न था । वर्ष 2014 के चुनाव में वे पहली बार भारतीय जनता पार्टी के टिकट पर सांसद बने थे।

रमेश चंद्र कौशिक का जन्म 3 दिसम्बर 1956 को सोनीपत के समासपुर में हुआ।

उन्होंने सोनीपत के हिन्दू कॉलेज और मेरठ विश्वद्यालय से बीए और एलएलबी की पढ़ाई की फिर पेशे से वकील बने। जब जन समस्याओं से वास्ता पड़ा तो उन्हे इनसे निपटने के लिये राजनीति उचित माध्यम लगा। स्व. बंसीलाल की हरियाणा विकास पार्टी से जुड़े और उन्होंने 1996 के चुनाव में उम्मीदवार के तौर पर सोनीपत की कैलाना सीट से लड़कर जीत दर्ज की। बंसीलाल सरकार में उन्हें हरियाणा प्रदेश का गृह मंत्री बनाया गया। और इसके बाद उन्हे 1997 में केबिनेट मंत्री भी बानाया जिसमे इन्होने कई महत्वपूर्ण विभाग संभाला था दूसरी बार 2005 में वे कांग्रेस के टिकट पर राई सीट से विधायक बने। हुड्डा सरकार में उन्हें मुख्य संसदीय सचिव बनाया गया लेकिन उनकी बढ़ती लोकप्रियता से पार्टी में ही उनके कई दुश्मन खड़े हो गये। 2013 में उन्होंने कांग्रेस का हाथ छोड़ भाजपा का कमल थाम लिया। 2014 में भाजपा ने उन्हें सोनीपत लोकसभा संसदीय क्षेत्र से अपना प्रत्याशी बनाया और वह पहली बार सांसद चुने गए। सोलहवीं लोकसभा में वे रेलवे की स्थायी समिति, नियम समिति, उपभोक्ता मामलों, खाद्य तथा सार्वजनिक वितरण मंत्रालय की सलाहकार समिति के सदस्य की ज़िम्मेदारी निभा चुके हैं।

17वीं लोकसभा में अबतक संसद में उनकी उपस्थिति शत प्रतिशत दर्ज की गयी है। सदन में वे खासे सक्रिय रहे हैं और पर्यावरण की वजह से किसानों को हो रही समस्याओं व रेहड़ी-पटरी वालों की स्थिति सहित कई महवपूर्ण विषयों पर होने वाली चर्चाओं में शामिल हुए। उन्होंने गृह, वित्त, जल संसाधन, रेलवे, परिवार कल्याण, सड़क एवं परिवहन, उपभोक्ता मामलों, पर्यटन, श्रम एवं रोजगार, क़ानून, कृषि, वाणिज्य, महिला एवं बाल विकास, पेट्रोलियम और शहरी विकास तथा अन्य मंत्रालयों से जनता से जुड़े विभिन्न मुद्दों पर 65 गंभीर सवाल किये हैं। सितंबर 2019 से वे ऊर्जा की स्टैंडिंग कमेटि के सदस्य है पेट्रोलियम और अक्टूबर में प्राकृतिक गैस और सरकारी आश्वासन समिति के सदस्य बनाये गये हैं।

सोनीपत के सांसद के तौर पर कौशिक लोगों के लिए अच्छी सड़क, पीने का साफ पानी और शिक्षा रोजगार को अपनी प्राथमिकता मानते हैं। उनका कहना है कि सोनीपत में विकास कार्य तेजी से किये जा रहे हैं जिनका असर जल्दी ही दिखने लगेगा। टेबल टेनिस और बेडमिंटन उनके पसिंदीदा खेल हैं। दोनों ही खेलों में वह विश्वद्यालय का प्रतिनिधित्व कर चुके हैं। सांसद रमेश ऑस्ट्रेलिया, कंबोडिया, कनाडा, चीन, इंग्लैंड, फ्रांस, जर्मनी, हॉलैंड, हांगकांग, इंडोनेशिया, इटली, मलेशिया, मॉरीशस, नेपाल, सिंगापुर, स्पेन, स्विट्जरलैंड, थाईलैंड, संयुक्त राज्य अमेरिका और वियतनाम आदि देशों का दौरा कर चुके हैं।

फेम इंडिया - एशिया पोस्ट "श्रेष्ठ सांसद सर्वे" में व्यक्तित्व, छवि, जनता से जुड़ाव, कार्यशैली, लोकप्रियता, सदन में उपस्थिति, बहस में हिस्सा, प्राइवेट बिल, सदन में प्रश्न, सांसद निधि का उपयोग व सामाजिक सहभागिता आदि 10 मुख्य मापदंड पर किये गये सर्वे में **रमेश चंद्र कौशिक**, **लगनशील** कैटगरी में प्रमुख स्थान पर है।

FAME INDIA

अपनी कर्त्तव्यनिष्ठा से क्षेत्र में मजबूत उपस्थिति दर्ज करवाते सांसद

अजय निषाद

फेम इंडिया मैगज़ीन- एशिया पोस्ट श्रेष्ठ सांसद सर्वे

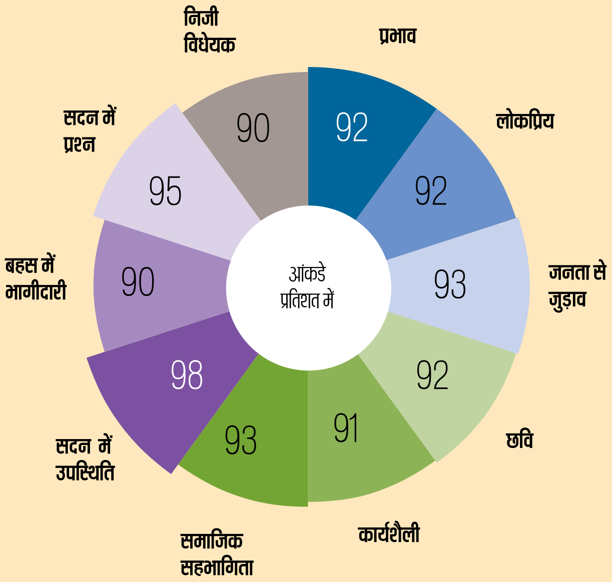

सर्वे स्रोत : विभिन्न प्रश्नों पर संसदीय क्षेत्रों की राय , विधायिका और मीडिया से जुड़े लोगों से स्टेक होल्ड सर्वे और लोकसभा से उपलब्ध डाटा के आधार पर

कर्त्तव्यनिष्ठ

विशेषता -

- संसदीय क्षेत्र में अच्छा प्रभाव
- बेहद कार्यकुशल और मेहनती राजनेता
- देश भर में निषाद , मल्लाह आदि जातियों में मजबूत पकड़

मुजफ्फरपुर , बिहार से भारतीय जनता पार्टी के लोकसभा सांसद अजय निषाद उन चोटी के राजनेताओं में से गिने जाते हैं जो कामयाबी के शिखर पर रहने के बावजूद जमीन से जुड़े रहने की कला जानते हैं। उनके पिता स्वर्गीय कैप्टन जयनारायण निषाद पांच बार सांसद और कैबिनेट मंत्री रह चुके थे और वे खुद लगातार दूसरी बार भारी मतों से चुनाव जीत कर सांसद बने हैं फिर भी हर किसी की मदद के लिये तत्पर दिखायी देते हैं।

फेम इंडिया - एशिया पोस्ट "श्रेष्ठ सांसद सर्वे" में व्यक्तित्व, छवि, जनता से जुड़ाव, कार्यशैली, लोकप्रियता , सदन में उपस्थिति, बहस में हिस्सा, प्राइवेट बिल, सदन में प्रश्न, सांसद निधि का उपयोग व सामाजिक सहभागिता आदि 10 मुख्य मापदंड पर किये गये सर्वे में **अजय निषाद**, कर्त्तव्यनिष्ठ कैटगरी में प्रमुख स्थान पर है।

हाजीपुर, वैशाली में 2 अक्टूबर 1966 के दिन जन्मे अजय निषाद को राजनीति विरासत में मिली है। स्वतंत्रता सेनानी से भारतीय सेना के कैप्टन बन कर रिटायर हुए उनके पिता ने मुजफ्फरपुर की जनता से जो संबंध बनाया वो आज भी कायम है। कॉलेज की पढ़ाई पूरी करने के बाद अजय निषाद भी पूरी तरह राजनीति और जनसेवा में रम गये। बिहार की जाति प्रधान राजनीति में भी उन्होंने सभी जातियों व धर्मों का समर्थन हासिल कर एक मिसाल कायम की।

हालांकि वर्ष 2014 में उनकी जोरदार जीत को उनके पिता की लोकप्रियता का असर माना गया, लेकिन पांच साल के उनके कार्यकाल का नतीजा ये निकला कि उन्हें मिलने वाले वोटों का आंकड़ा 49% से बढ़ कर 63% हो गया। जहां वर्ष 2014 में उन्हें करीब दो लाख वोटों से जीत मिली थी, वहीं वर्ष 2019 के चुनाव में उन्हें चार लाख वोटों के अंतर से जीत हासिल हुई। सत्रहवीं लोकसभा में उन्होंने 98 प्रतिशत उपस्थिति दर्ज की है और तीन बहसों में हिस्सा लिया है। अजय निषाद संसद में सवाल उठाने में महारत हासिल कर चुके हैं क्योंकि दो सत्र में ही वे 53 प्रश्न पूछ चुके हैं जिनमें कई तारांकित भी थे। उन्होंने स्वास्थ्य, पर्यटन, बाल श्रम, रोजगार, शिक्षा, न्यूनतम मजदूरी आदि कई जन सरोकार के मुद्दों को बेबाकी से सदन में उठाया है। उन्हें वर्ष 2019 के जुलाई में अन्य पिछड़े वर्ग के लिये बनी संसदीय कमेटि का सदस्य बनाया गया जबकि सितंबर में वे कोयला व इस्पात मामलों की स्थायी समिति का सदस्य चुने गये।

बैडमिंटन, क्रिकेट व तैराकी जैसे खेलों के शौकीन अजय निषाद समय-समय पर प्रतियोगिताओं और सांस्कृतिक समारोहों के आयोजनों से भी संबद्ध रहते हैं। वे स्वभाव से मृदुभाषी हैं और विवादों से दूर रहने की मुजफ्फरपुर में उन्होंने केंद्र सरकार की मदद से सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल बनवाया और चमकी बुखार पर विशेष लैब बनवाया है। इलाके की स्वच्छता पर भी उनका विशेष ध्यान है।

प्रतिभावान

अपनी प्रतिभावान कार्यशैली से विकास को प्रयासरत है सांसद

अजय भट्ट

FAME INDIA

फेम इंडिया मैगज़ीन- एशिया पोस्ट श्रेष्ठ सांसद सर्वे

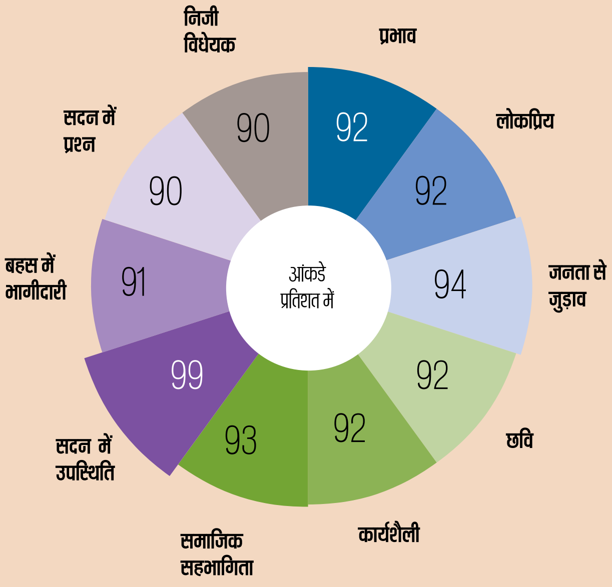

सर्वे स्रोत : विभिन्न प्रश्नों पर संसदीय क्षेत्रों की राय , विधायिका और मीडिया से जुड़े लोगों से स्टेक होल्ड सर्वे और लोकसभा से उपलब्ध डाटा के आधार पर

प्रतिभावान

विशेषता -

- उत्तराखंड में पार्टी संगठन के मजबूत स्तंभ
- क्षेत्र और राज्य की जनता से अच्छा जुड़ाव
- संसदीय क्षेत्र में विकास को लेकर प्रयासरत

आइये हम आपको मिलवाते हैं एक ऐसी शख्सियत से जिसे किस्मत ने हर कदम पर हराने की कोशिश की, लेकिन अपने साहस, मेहनत और सूझ-बूझ से सफलता के शिखर पर जा पहुंचा। ये शख्स हैं उत्तराखंड के सबसे लोकप्रिय सांसद अजय भट्ट।

अजय भट्ट का जन्म 1 मई, 1961 को अल्मोड़ा जिले के रानीखेत में हुआ था। बचपन से ही वे बेहद मेहनती, आत्मविश्वासी और जुझारू रहे हैं। कम उम्र में ही उन्होंने अपने पिता और दो बड़े भाइयों को खो दिया। उनके परिवार को आर्थिक परेशानियों का सामना करना पड़ा, लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी। उन्होंने रानीखेत के माँ दूनागिरी और हैड़ाखान बाबा मन्दिरों में छोटी-छोटी दुकानें लगाकर चाय, चूड़ी-बिंदी और सब्जी आदि बेचकर अपने परिवार का पालन-पोषण किया, साथ ही अपनी पढ़ाई भी जारी रखी। उन्होंने अल्मोड़ा कॉलेज में मेस चलाकर अपनी एलएलबी की पढ़ाई पूरी की। उन्होंने वकालत शुरू की और अपनी पहचान एक अच्छे अधिवक्ता के तौर पर बनायी।

कॉलेज के दिनों से ही अजय भट्ट का जुड़ाव राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से हुआ और वे सक्रिय राजनीति में भी उतरे। वर्ष1985 से ही भारतीय जनता युवा मोर्चा के जिला अध्यक्ष व कई अन्य पदों पर रहे। वर्ष 1985 से भाजपा की कार्यसमिति के सदस्य बने व अल्मोड़ा जिले में उत्तरांचल प्रदेश संघर्ष समिति, केसरिया वाहिनी, प्रदेश सदस्यता अभियान आदि के प्रमुख रहे। संगठन पर उनकी पकड़ को देखते हुए पार्टी ने जल्दी ही प्रदेश मंत्री और महामंत्री पदों की जिम्मेदारी सौंपी। वर्तमान में वे भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष हैं।

वर्ष 1996 में पहली बार उन्होंने रानीखेत से चुनाव जीतकर उत्तर प्रदेश विधानसभा में अपने क्षेत्र का प्रतिनिधित्व किया। वे उत्तर प्रदेश विधान सभा में लोक लेखा समिति व सीपीए के सदस्य तथा विधान सभा की विशेषाधिकार समिति के सभापति का दायित्व निभा चुके हैं। वर्ष 2000 में उत्तराखंड राज्य बनने पर भी उन्होंने वर्ष 2002, 2007 और 2012 में चुनाव जीतकर बतौर विधायक उत्तराखंड विधानसभा में अपने क्षेत्र का प्रतिनिधित्व किया। प्रदेश में जब भी भाजपा की सरकार रही, उन्हें मंत्रिमंडल में शामिल किया गया। बतौर मंत्री उनका पर्फॉर्मेंस हर बार शानदार रहा। बतौर स्वास्थ्य मंत्री उन्होंने सरकारी डॉक्टरों की प्राइवेट प्रैक्टिस पर सख्ती से रोक लगायी जिसकी आज भी प्रशंसा होती है। वे कांग्रेस शासन के दौरान नेता प्रतिपक्ष रहे और वर्ष 2019 के संसदीय चुनाव में पूर्व मुख्यमंत्री हरीश रावत जैसे दिग्गज को साढ़े तीन लाख वोटों से हरा कर अपनी लोकप्रियता का डंका बजाया।

बतौर सांसद उन्होंने पहले कार्यकाल में ही दिखा दिया कि वे सदन के कार्यों में खासे सक्रिय हैं। उन्होंने दो सत्रों के दौरान ही 15 बहसों और 5 विशेष उल्लेख की चर्चाओं में सक्रिय भागीदारी निभायी। उन्होंने स्वास्थ्य, सड़क परिवहन और रेलवे आदि से संबंधित 10 प्रश्न पूछे हैं। सदन में उनकी उपस्थिति 99 प्रतिशत रही है।

अजय भट्ट सामाजिक जीवन में काफ़ी सक्रिय रहे हैं। वे लगातार दस वर्षों तक सरकारी श्रमिक संघ कॉपरेटिव ड्रग फैक्ट्री, रानीखेत के अध्यक्ष रहे। वे नागरिक सुरक्षा परिषद, राष्ट्रीय ग्रामोत्थान परिषद, उत्तरांचल हरिजन शिल्प कला उत्थान, नुपूर कला एवं खेल संस्थान, बाल्मिकी समाज, संयोजक श्रीराम कार सेवा समिति, अम्बेडकर मिशन जैसी कई संस्थाओं से जुड़े हैं।

फेम इंडिया - एशिया पोस्ट "श्रेष्ठ सांसद सर्वे" में व्यक्तित्व, छवि, जनता से जुड़ाव, कार्यशैली, लोकप्रियता, सदन में उपस्थिति, बहस में हिस्सा, प्राइवेट बिल, सदन में प्रश्न, सांसद निधि का उपयोग व सामाजिक सहभागिता आदि 10 मुख्य मापदंड पर किये गये सर्वे में **अजय भट्ट**, प्रतिभावान कैटगरी में प्रमुख स्थान पर है।

FAME INDIA

सरोकार

जन सरोकार के मुद्दों पर लगातार प्रयासरत हैं

रामस्वरूप शर्मा

FAME INDIA

फेम इंडिया मैगज़ीन- एशिया पोस्ट श्रेष्ठ सांसद सर्वे

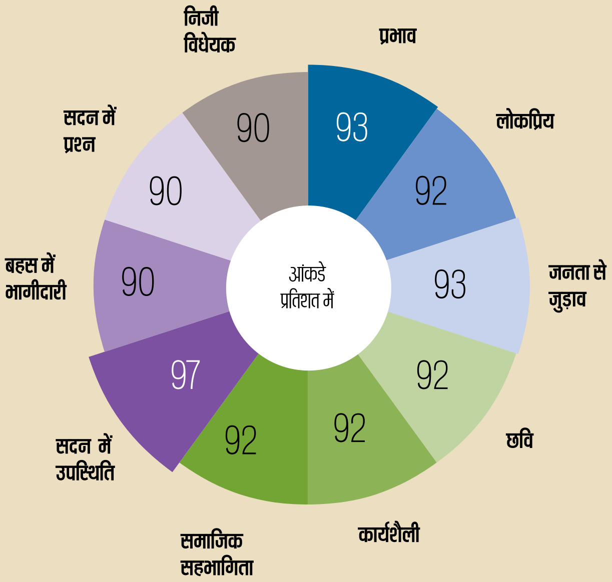

सर्वे स्रोत : विभिन्न प्रश्नों पर संसदीय क्षेत्रों की राय , विधायिका और मीडिया से जुड़े लोगों से स्टेक होल्ड सर्वे और लोकसभा से उपलब्ध डाटा के आधार पर

सरोकार

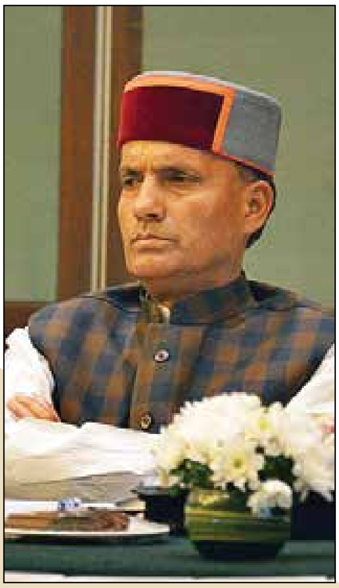

विशेषता -

- क्षेत्रीय राजनीति में अच्छा प्रभाव
- संसदीय क्षेत्र में विकास के लिए प्रतिबद्ध सांसद
- साफ सुथरी छवि वाले राजनेता

कहते हैं सच्ची लगन से की गयी सेवा कभी व्यर्थ नहीं जाती और देर-सबेर उसका फल जरूर मिलता है। कुछ ऐसा ही फल मिला हिमाचल प्रदेश के मंडी से लोकसभा सांसद राम स्वरूप शर्मा को। वे लगातार दूसरी बार दो-दो दिग्गजों को भारी मतों से परास्त कर अपनी लोकप्रियता सिद्ध कर चुके हैं।

राम स्वरुप शर्मा का जन्म 10 जून 1958 को हिमाचल प्रदेश में मंडी जिले के जल्पेहर गांव में एक साधारण परिवार में हुआ था। वे दसवीं तक की ही शिक्षा प्राप्त कर पाये, लेकिन बचपन से ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और जनसंघ व भारतीय जनता पार्टी से संबद्ध रहे और स्थानीय स्तर पर पार्टी व समाज की सेवा की। उनकी लगन और संगठन पर पकड़ से प्रभावित होकर भाजपा ने पहले मंडी जिला का आयोजन सचिव और बाद में पूरे हिमाचल प्रदेश के आयोजन सचिव का कार्यभार सौंपा। उन्होंने हिमाचल प्रदेश के निवासियों की कठिनाइयों को करीब से समझा व पार्टी के सक्रिय सदस्य के तौर पर उनसे निपटने में काफी मदद की। उन्होंने हिमाचल प्रदेश खाद्य और नागरिक आपूर्ति निगम के उपाध्यक्ष के रूप में भी कार्य किया।

वर्ष 2014 में सोलहवीं लोकसभा के लिये भाजपा ने राम स्वरूप शर्मा को पूर्व मुख्यमंत्री वीरभद्र सिंह की पत्नी और कांग्रेसी सांसद प्रतिभा सिंह के विरुद्ध उतारा। उन्होंने कांग्रेसी दिग्गज को हरा कर सनसनी फैला दी थी क्योंकि प्रतिभा सिंह को इलाके में महारानी का दर्जा प्राप्त था। वर्ष 2019 में सत्रहवीं लोकसभा के चुनाव में कांग्रेस ने हिमाचल प्रदेश के दिग्गज और मंडी सीट से रिकॉर्ड वोटों से जीत चुके राजनेता सुखराम के पौत्र आश्रय को चुनावी मैदान में उतारा, लेकिन शर्मा ने उन्हें भारी मतों से हरा कर नया रिकॉर्ड बना डाला।

संसदीय मूल्यों के प्रति भारी आस्था रखने वाले राम स्वरूप शर्मा की संसद के पहले दो सत्रों में सदन में उपस्थिति 97 प्रतिशत रही है। वे शांत स्वभाव के और पार्टी के अनुशासन में रहने वाले सांसद माने जाते हैं। उन्होंने 3 बहसों और दो विशेष उल्लेख की चर्चाओं में भागीदारी की है। उन्होंने तीन सवाल पूछे हैं और उन्हें विदेश मंत्रालय की स्थायी समिति व सलाहकार समिति का सदस्य बनाया गया है। वे अपने क्षेत्र में काफी लोकप्रिय रहते हैं और इलाके की जनता से उनका करीबी लगाव है।

फेम इंडिया - एशिया पोस्ट "श्रेष्ठ सांसद सर्वे" में व्यक्तित्व, छवि, जनता से जुड़ाव, कार्यशैली, लोकप्रियता, सदन में उपस्थिति, बहस में हिस्सा, प्राइवेट बिल, सदन में प्रश्न, सांसद निधि का उपयोग व सामाजिक सहभागिता आदि 10 मुख्य मापदंड पर किये गये सर्वे में **रामस्वरूप शर्मा**, **सरोकार** कैटगरी में प्रमुख स्थान पर है।

FAME INDIA

सदन में प्रगतिशील सोच के सक्रिय सांसद हैं

रवनीत सिंह बिट्टू

फेम इंडिया मैगज़ीन- एशिया पोस्ट
श्रेष्ठ सांसद सर्वे

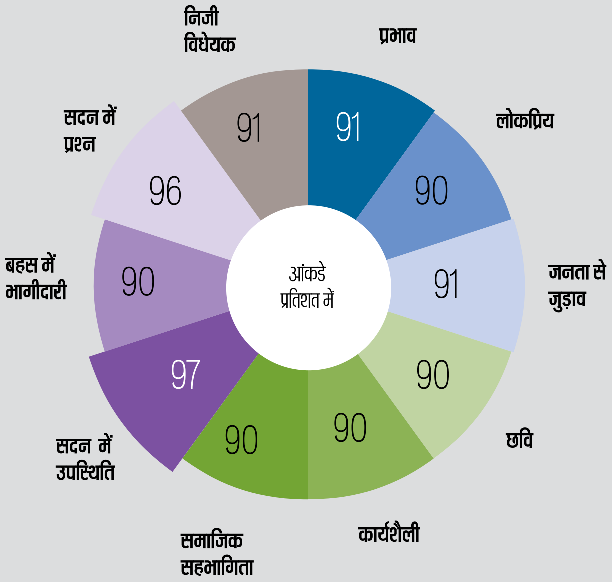

सर्वे स्रोत : विभिन्न प्रश्नों पर संसदीय क्षेत्रों की राय , विधायिका और मीडिया से जुड़े लोगों से स्टेक होल्ड सर्वे और लोकसभा से उपलब्ध डाटा के आधार पर

सक्रिय

विशेषता -

- युवा , शालीन और सक्रिय सांसद की छवि
- संसदीय क्षेत्र में अच्छा प्रभाव
- पार्टी संगठन के विश्वस्त राजनेता

कभी उग्रवाद का शिकार रहे पंजाब में मुख्यमंत्री बेअंत सिंह की हत्या को पूरे देश ने राष्ट्रवाद पर हमला माना था और देश-विरोधियों से डट कर मुकाबला करने का संकल्प लिया था। ये कुर्बानी व्यर्थ न जाये इस भावना को अपने दिल में लिये समाजसेवा करने वाले इसी परिवार की तीसरी पीढ़ी के प्रतिनिधि हैं रवनीत सिंह उर्फ बिट्टू जिन्हें जनता ने लगातार तीसरी बार अपना प्यार व समर्थन देकर लोकसभा भेजा है।

फेम इंडिया - एशिया पोस्ट "श्रेष्ठ सांसद सर्वे" में व्यक्तित्व, छवि, जनता से जुड़ाव, कार्यशैली, लोकप्रियता , सदन में उपस्थिति, बहस में हिस्सा, प्राइवेट बिल, सदन में प्रश्न, सांसद निधि का उपयोग व सामाजिक सहभागिता आदि 10 मुख्य मापदंड पर किये गये सर्वे में **रवनीत सिंह बिट्टू**, योग्य कैटगरी में प्रमुख स्थान पर है।

लुधियाना के कोटली में 10 सितंबर 1975 को जन्मे रवनीत सिंह को राजनीति विरासत में मिली है। हालांकि उनका परिवार समृद्ध था, लेकिन उन्होंने पढ़ाई गुरुनानक पब्लिक स्कूल व चंडीगढ़ के सरकारी कॉलेज से ही की। इसके बाद इंटीग्रेटेड लर्निंग इन मैनेजमेंट युनिवर्सिटी के ईस्टर्न इंस्टीच्यूट से बीसीए की डिग्री हासिल की। उनमें युवावस्था से ही समाज सेवा की भावना कूट-कूट कर भरी थी। वे एक उम्दा खिलाड़ी भी थे और हॉकी और कबड्डी; कई खेलों में स्कूल और कॉलेज का प्रतिनिधित्व और स्पोर्ट्स प्रीफेक्ट रह चुके हैं। रवनीत सिंह नेशनल हॉकी टीम के प्लेयर भी रह चुके हैं।

रवनीत सिंह बिट्टू का जुड़ाव बचपन से ही कांग्रेस से था इसलिये पार्टी की युवा इकाई से शुरुआत की। यूथ कांग्रेस में आंतरिक पार्टी लोकतंत्र लाने के लिये आलाकमान की पहल के बाद, 23 दिसंबर 2008 को पंजाब यूथ कांग्रेस के पहले लोकतांत्रिक रूप से चुने हुए अध्यक्ष बने। देश में आम आदमी को हो रही समस्याओं को जानने के लिये, नवंबर, 2010 को 45 दिन की पदयात्रा शुरू की। इस यात्रा का मुद्दा "जवानी ते किसानी नू बचाई, नवां पंजाब बनैया"; सभी जिलों में, सभी 13 संसदीय निर्वाचन क्षेत्रों में और लगभग 72 विधानसभा क्षेत्रों में 1500 किलोमीटर की दूरी तय की गयी। कन्या भ्रूण हत्या के मुद्दे पर भी बड़े पैमाने पर काम किया।

वर्ष 2009 में 15वीं लोकसभा के लिये लुधियाना सीट से चुने गये। फिर वर्ष 2014 और 2019 में देश भर में मोदी लहर के बावजूद वे जीत कर क्रमशः 16वीं और 17वीं लोकसभा के लिये हुए चुनावों में अपनी विजय पताका फहरा कर दिखा दिया कि अगर सच्चे मन से जनसेवा की जाये तो जनता दिल से जुड़ती है।

रवनीत सिंह बिट्टू ने पंजाब यूथ कांग्रेस के अध्यक्ष के रूप में, पंजाब के युवाओं में मादक पदार्थों की लत के खिलाफ अभियान शुरू किया। मई 2011 में, 11 कार्यकर्ताओं के साथ 121 घंटे की अनिश्चितकालीन भूख हड़ताल के बाद, राज्य सरकार ने ड्रग प्रिवेंशन बोर्ड की स्थापना की थी। इस बोर्ड की मदद से और सभी जिलों में डी-एडिक्शन सेंटर खोलकर, राज्य सरकार नशीली दवाओं के दुरुपयोग को नियंत्रित करने की कोशिश कर रही है और हजारों युवा लाभान्वित हुए हैं। 2013 में, संविधान सभा में डिफरेंटली-एबल्ड सिटिजन्स के लिये शिविरों का आयोजन किया गया, जहां 1631 व्यक्तियों को व्हील-चेयर, ट्राइ-साइकल, कृत्रिम अंग दिए गये। उनकी कृषि, ग्रामीण अर्थव्यवस्था और इसके बुनियादी ढांचे में बहुत रुचि है। ड्रिप इरीगेशन, प्रदूषण नियंत्रण, अपशिष्ट प्रबंधन, वर्षा जल संचयन, नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाओं, शहरी परिवहन को बढ़ावा देना। वे नेपाल, सिंगापुर, ब्रिटेन और अमेरिका आदि देशों की यात्राएं कर चुके हैं।

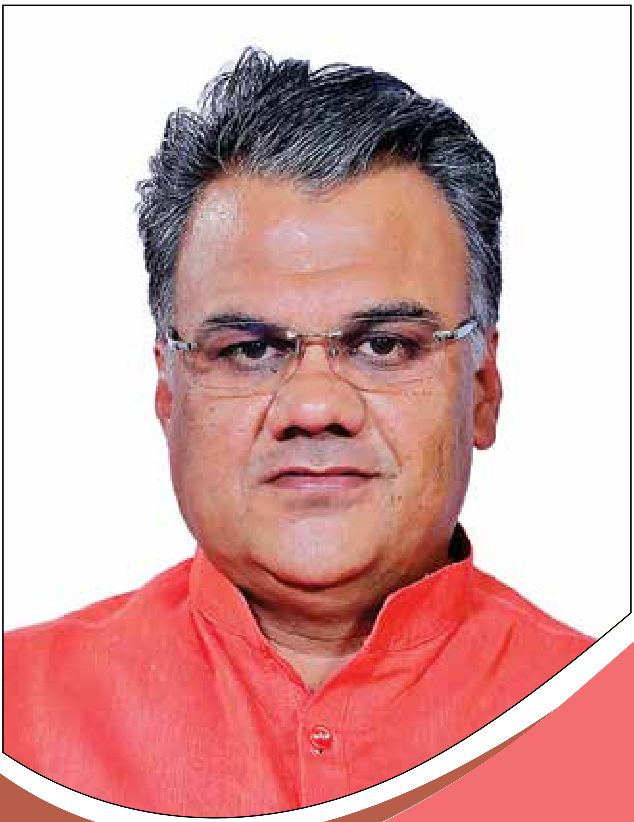

बुलंद इरादों के कर्मयोगी सांसद हैं देवजी पटेल

फेम इंडिया मैगज़ीन- एशिया पोस्ट श्रेष्ठ सांसद सर्वे

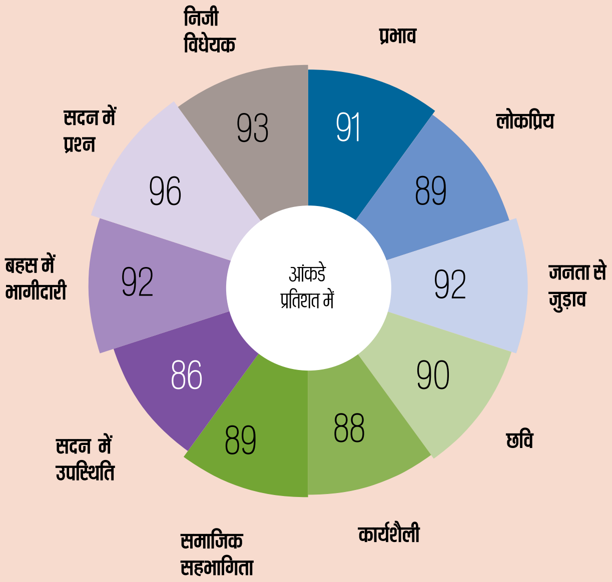

सर्वे स्रोत : विभिन्न प्रश्नों पर संसदीय क्षेत्रों की राय , विधायिका और मीडिया से जुड़े लोगों से स्टेक होल्ड सर्वे और लोकसभा से उपलब्ध डाटा के आधार पर

कर्मयोद्धा

विशेषता -

- क्षेत्र में विकास के लिए क्रियाशील सांसद
- साफ सुथरी छवि
- समय समय पर क्षेत्र में समाजिक कार्यक्रम का आयोजन करवाना

कहते हैं अक्सर अभाव इंसान को तोड़ देता है, लेकिन कई ऐसे मजबूत इरादों वाले होते हैं जो इस कमजोरी को ही हथियार बना कर परिस्थितियों से जीत जाते हैं। राजस्थान-गुजरात की सीमा पर बसे जालौर के सांसद देवजी पटेल ऐसे ही एक करिश्माई राजनेता हैं। उन्होंने उच्च शिक्षा के अभाव में हार कर अपना घर-बार छोड़ा, तो विजेता बनकर वापस लौटे और सबकुछ जीत लिया।

देवजी पटेल का जन्म 25 सितम्बर 1976 जाजुसर, सांचोर, जालौर (राजस्थान) में हुआ। उनके पिता मानसिंगराम और माँ मीरादेवी हैं। उन्होंने स्थानीय स्कूल में मैट्रिक तक की पढ़ाई की और आगे की शिक्षा के लिये अहमदाबाद चले गये। वहां उनका मन पढ़ाई के बदले व्यापार में रम गया और उन्होंने स्टील पाइप का व्यापार शुरू किया। धार्मिक विचारों वाले देवजी ने अपनी फर्म का नाम रखा 'डिवाइन ट्यूब्स' प्राइवेट लिमिटेड। व्यापार बढ़ने पर देवजी वापस अपने गांव लौटे और वहां इसी नाम से एक हाई स्कूल भी खोला। डिवाइन नाम से ही समाजसेवा और व्यापार से जुड़े कई अन्य कार्यक्रमों को शुरू किया। लोकप्रियता इतनी बढ़ी कि भारतीय जनता पार्टी यानि बीजेपी ने 2009 में 15वीं लोकसभा के लिये प्रत्याशी बनाया और उन्हें शानदार जीत हासिल हुई। इसके बाद 2014 में और फिर 2019 में वे क्रमशः 16वीं और 17वीं लोकसभा के लिये निर्वाचित हुए।

देवजी पटेल की खास बात यह है कि वे किसी भी गरीब की सहायता करने में सबसे आगे रहते हैं। स्थानीय लोगों के लिए देवजी पटेल एक मसीहा के तौर पर जाने जाते हैं। जालोर सिरोही में एक बार बाढ़ आने पर उन्होंने खुद लोगों की मदद के लिए गांव गांव जा कर सभी की सहायता की थी। मंडार के पास वे खुद भी बाढ़ में फंस गये थे, लेकिन तब भी समाजसेवा के लिये उनका जज्बा कम नहीं हुआ। इन्होंने सक्रिय युवा सांसद के रूप में अपनी पहचान बनायी है। वर्तमान में वे भारतीय जनता पार्टी की प्रदेश कार्यकारिणी में सदस्य हैं।

17वीं लोकसभा में मिली शानदार जीत के बाद से देवजी पटेल संसद में काफी सक्रिय हैं। संसद में उन्हें कृषि मामलों की स्थायी समिति का सदस्य बनाया गया है। उन्होंने पहले दो सत्रों में ही 27 बहसों में सक्रिय भागीदारी निभायी है और 69 प्रश्न व एक पूरक प्रश्न पूछे। उनके प्रश्न कृषि, युवा मामले, श्रम एवं रोजगार, युवा मामलों और रेलवे आदि से संबंधित हैं। उन्होंने डेयरी उत्पादों के न्यूनतम समर्थन मूल्य घोषित करने, मवेशियों के लिये चारा प्रोटेक्शन बोर्ड बनाने व देसी गायों के संरक्षण संबंधी तीन प्राइवेट बिल पेश किये हैं। दोनों सत्रों को मिलाकर सदन में उनकी कुल उपस्थिति 86% रही है।

देवजी पटेल को देसी खेलों में काफी गहरी रुचि है और वे खोखो, कबड्डी और रिंग जैसे खेलों को अंतर्राष्ट्रीय पहचान दिलाने में जुटे हैं। वे अखिल भारतीय युवा संगठन, श्री रूपाजी ट्रैक चैरिटेबल ट्रस्ट, सरदार पटेल चैरिटेबल ट्रस्ट आदि कई स्वयंसेवी संस्थाओं के अध्यक्ष भी हैं।

फेम इंडिया - एशिया पोस्ट "श्रेष्ठ सांसद सर्वे" में व्यक्तित्व, छवि, जनता से जुड़ाव, कार्यशैली, लोकप्रियता, सदन में उपस्थिति, बहस में हिस्सा, प्राइवेट बिल, सदन में प्रश्न, सांसद निधि का उपयोग व सामाजिक सहभागिता आदि 10 मुख्य मापदंड पर किये गये सर्वे में **देवजी पटेल**, कर्मयोद्धा कैटगरी में प्रमुख स्थान पर है।

FAME INDIA

दक्ष

हौसला की उड़ान से पहचान बनाने में सफल रही हैं

अगाथा संगमा

FAME INDIA

फेम इंडिया मैगज़ीन- एशिया पोस्ट
श्रेष्ठ सांसद सर्वे

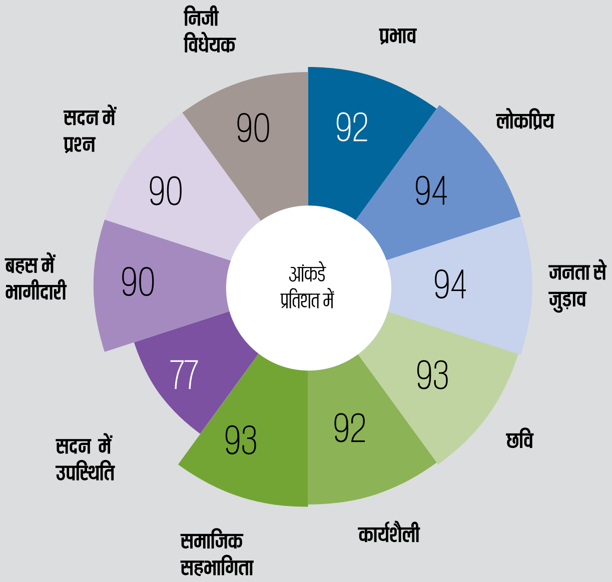

सर्वे स्रोत : विभिन्न प्रश्नों पर संसदीय क्षेत्रों की राय , विधायिका और मीडिया से जुड़े लोगों से स्टेक होल्ड सर्वे और लोकसभा से उपलब्ध डाटा के आधार पर

दक्ष

विशेषता -

- शांत स्वभाव की दक्ष राजनेता
- मेघालय की सियासत में महत्वपूर्ण स्थान
- संसद में अच्छा प्रदर्शन

कहते हैं पूत के पांव पालने में ही दिख जाते हैं। ये कथन अगाथा कोंगक्कल संगमा के बारे में बिलकुल सटीक बैठता है। वे यूपीए-2 के प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह की सरकार में सबसे कम उम्र की केंद्रीय राज्यमंत्री थीं और तब से लगातार तीसरी बार लोकसभा सांसद चुनी जा चुकी हैं।

अगाथा कोंगक्कल संगमा का जन्म 24 जुलाई 1980 को नई दिल्ली में हुआ था। उनके पिता पी ए संगमा लोकसभा के स्पीकर थे। उनका परिवार गारो हिल्स के राजवंश से है और इलाके में उन्हें खासा सम्मान प्राप्त है। उनकी पढ़ाई कई जगहों पर हुई। वे पुणे विश्वविद्यालय से एलएलबी डिग्री होल्डर है। आगे चलकर उन्होंने ब्रिटेन के नॉटिंघमशायर

यूनाइटेड किंगडम विश्वविद्यालय से पर्यावरण प्रबंधन में स्नातकोत्तर किया। वे दिल्ली उच्च न्यायालय की बार काउंसिल की सदस्य भी हैं। इसके अलावा उन्होंने साइबर लॉ, कॉरपोरेट कानून, मानवाधिकार कानून, प्रतिभूति और निवेश कानून जैसे कई विषयों में डिप्लोमा प्राप्त हैं।

अगाथा को बचपन से ही घर में राजनैतिक माहौल मिला। उनके पिता स्व. पीए संगमा का सौम्य व्यक्तित्व उनमें झलकता है। शांत और सौम्य अगाथा अपने क्षेत्र के लोगों के बीच भी काफी सराही जाती है। वर्ष 2008 में जब पीए संगमा ने मेघालय की प्रादेशिक स्तर की राजनीति में उतरने के लिये सांसद पद से इस्तीफा दिया तो खाली हुई सीट पर हुए उपचुनाव में जीतकर वे पहली बार 14वीं लोकसभा पहुंची। वर्ष 2009 में दोबारा जीत कर आयीं तो तत्कालीन प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने उन्हें जल संसाधन विभाग का केंद्रीय राज्य मंत्री बना दिया। ग्रामीण विकास मंत्रालय में रहते हुए अगाथा ने काफी काम किया है खासकर के ग्रामीण क्षेत्रों के महिलाओं के लिए उनकी प्राथमिकता थी कि उन्हें हर घर को सुनिश्चित रूप से पानी मिले। उनकी प्रथमिकता में गारो हिल्स और भारत का विकास रहा। अगाथा को उस समय के तत्कालीन अधिकारी पानी वाली महिला भी कहते थे। वर्ष 2012 में उनके पिता ने नय राजनीतिक दलनैश पीपल्स पार्टी

वर्ष 2014 और वर्ष 2019 में वे क्रमशः 16वीं और 17वीं लोकसभा के लिये चुनाव जीतकर पहुंची।17वीं लोकसभा के पहले दो सत्रों में अगाथा कोंगक्कल संगमा ने 7 डिबेट में हिस्सा लिया। उनके माध्यम से 5 प्रश्न सदन के पटल पर रखे गये जो बाढ़, सूखा, हेलीकॉप्टर क्रैश अरुणाचल में होने और कृषि के लिए सिंचाई योग्य पानी के उपयोग और उपायों से संबंधित हैं। अगाथा संगमा की सदन में कुल उपस्थिति 77% रही।

तुरा के युवाओं और आसपास के इलाकों के विकास लोगों के लिए रोजगार मौजूदा शिक्षा के साथ उनका फोकस युवाओं को तकनीकी हुनर और स्वाबलंबन पर है।

अगाथा ने के भाई कोनराड संगमा मेघालय के मुख्यमंत्री है और दूसरे भाई जेम्स भी राजनीति में सक्रिय है। अगाथा ने डॉ. पैट्रिक रोंगमा मारक से नवंबर 2019 में शादी की है। अगाथा को फोटॉग्राफी और पर्यावरण से विशेष लगाव है।

फेम इंडिया - एशिया पोस्ट "श्रेष्ठ सांसद सर्वे" में व्यक्तित्व, छवि, जनता से जुड़ाव, कार्यशैली, लोकप्रियता, सदन में उपस्थिति, बहस में हिस्सा, प्राइवेट बिल, सदन में प्रश्न, सांसद निधि का उपयोग व सामाजिक सहभागिता आदि 10 मुख्य मापदंड पर किये गये सर्वे में **अगाथा संगमा**, **दक्ष** कैटगरी में प्रमुख स्थान पर है।

FAME INDIA

आस्था

देश के हिन्दू तीर्थ स्थलों में बिहार के मधुबनी जिला मुख्यालय के निकट मंगरौनी गांव स्थित एकादश रुद्र महादेव का अलग ही महत्व है। ये महत्व इसलिये भी बढ़ जाता है कि यह अपने आप में दुनिया में अनोखी जगह है, जहां एक साथ शिव के विभिन्न रूपों 11 शिवलिंगों का दर्शन व पूजन का अवसर मिलता है। यहां शिव 11 रूपों महादेव, शिव, रुद्र, शंकर, नील लोहित, ईशान, विजय, भीम देवदेवा, भदोद्भव एवं कपालिश्च के दर्शन का सौभाग्य शिव भक्तों को विशेष तौर पर मिलता है।

मधुबनी में स्थापित है एकादश रुद्र महादेव का दुर्लभ मंदिर

इसके अलावा इस एकादश रुद्र मंदिर परिसर में विष्णु के विभिन्न अवतारों, श्री विद्या यंत्र, विष्णुपद गया क्षेत्र, महाकाल, महाकाली, गणेश सरस्वती आदि साथ ही आम एवं महुआ का आलिंगन-बद्ध वृक्ष, भगवान शिव, पार्वती, महा-लक्ष्मी, महा-सरस्वती यंत्र, विष्णु-पादुका आदि के भी दर्शन का सौभाग्य प्राप्त होता है।

इस परिसर स्थित पीपल वृक्ष का भी तांत्रिक महत्तम अलग ही है। कहते हैं कि इसके स्पर्श मात्र से भूत प्रेत के प्रभाव से लोगों को मुक्ति मिल जाती है। वहीं श्री विद्या यंत्र के दर्शन व पूजन से लक्ष्मी एवं सरस्वती दोनों की कृपा बनी रहती है।

सोमवार के दिन यहां भंडारे का आयोजन किया जाता है, इस दिन यहां रुद्राभिषेक एवं षोडषोपचार पूजन करते हैं तो उनकी इच्छित मनोकामनाएं निश्चित रूप से पूरी होती हैं। पंडित जी बताते हैं कि यहां एक ही शक्ति-वेदी पर स्थापित शिव के सभी एकादश रुद्र लिंग रूपों में 10 मई से 21 मई 2000 ई। के बीच विभिन्न तरह की आकृतियां उभर आयीं।

1 महादेव – विगत 30 जुलाई 2001 को अर्द्ध-नारीश्वर का रूप प्रकट हुआ है। कामाख्या माई का ये भव्य रूप है। पांचवें सोमवारी के दिन गणेश जी गर्भ में प्रकट हुए। शिवलिंग पर ये रूप स्पष्ट नजर आती है।

2 शिव – प्रभु श्री राम ने कहा था कि मैं ही शिव हूं। इस लिंग में सिंहासन का चित्र उभरा है, जो प्रभु श्री राम का सिंहासन दर्शाता है।

3 रुद्र – भय को हराने वाले इस लिंग में बजरंगबली पहाड़ लेकर उड़ रहे है बड़ा ही अद्भुत चित्र प्रकट हुआ है।

4 शंकर – गीता के दसवें अध्याय में श्री कृष्ण ने कहा है कि मैं ही शंकर हूं। इस लिंग में श्री कृष्ण का सुदर्शन चक्र, बांसुरी और बाजूबंध स्पष्ट दृष्टिकोण होता है।

5 नील लोहित– जब महादेव ने विषपान किया था, तब उनका नाम नील लोहित पड़ गया था। इस लिंग में सांप एवं ऊँ का अक्षर प्रकट हुआ है।

6 ईशान – हिमालय पर निवास करने वाले महादेव जिसे केदारनाथ कहते हैं विगत नौ जुलाई 2001 सावन के पहले सोमवार को राजराजेश्वरी का रूप प्रकट हुआ।

7 विजय – इस शिवलिंग में छवि बन रही है जिस कारण आकृति अस्पष्ट है।

8 भीम – महादेव का एक रूप भी है। इस शिवलिंग में गदा की छवि उभर कर सामने आयी है। गदा का डंडा अभी धीरे-धीरे प्रकट हो रहा है।

9 देवादेव – ये लिंग सूर्य का रूप है। इस शिवलिंग में गदा के नीचे दो भागों से सूर्य की किरणें फूटकर शीर्ष में मिल रही है।

10 भवोद्भव – इस लिंग में उमा शंकर की आकृति प्रकट हुई है। दोनों आकृतियां धीरे-धीरे बढ़ रही है।

11 कपालिश्च– महादेव का एक रूप बजरंगबली है। बजरंगबली ब्रह्मचारी थे, इसलिये संभवतः इस लिंग में कोई चित्र नहीं उभर रहा है। किसी दिन ये शिवलिंग अपने आप पूरा लाल हो जायेगा।

कांची पीठ के शंकराचार्य जयेन्द्र सरस्वती, बिहार राज्य धार्मिक न्यास बोर्ड के अध्यक्ष आचार्य किशोर कुणाल व अधीक्षण पुरातत्व-विद डॉ। फणीकांत मिश्र आदि आये तो यहां शिव के एकादश रुद्र का अलौकिक रूप देख भाव विह्वल हो गये। उन्होंने कहा कि ये अपने आप में धार्मिक दृष्टिकोण से अद्वितीय पूजन व तीर्थ स्थल है।

बाबा जी का कहना है कि सभी शिव भक्तों को मात्र एक बार आकर इन शिवलिंगों उभरी हुई आकृतियों को देखे तो पता लगेगा कि ऐसे शिवलिंग विश्व में कहीं भी नहीं है

गौरतलब है कि प्रसिद्ध तांत्रिक पंडित मुनीश्वर झा ने 1953 ई। में यहां शिव मंदिर की स्थापना की थी। इस मंदिर में स्थापित सभी शिवलिंग काले ग्रेनाइट पत्थर के बने हुए हैं जिनका प्रत्येक सोमवार शाम को दूध, दही, घी, मधु, पंचामृत, चंदन आदि से स्नान होता है। श्रृंगार के लिये विशेष तौर पर कोलकाता से कमल के फूल मंगाये जाते हैं। प्रधान पुजारी कहते हैं कि जो व्यक्ति अपने पितरों का पिंडदान करने नहीं गया नहीं जा पाते उनके लिये यहां गया क्षेत्र बना है जहां पिण्डदान कर मुक्ति पायी जाती है।

बैंक ऑफ़ बड़ौदा
प्रस्तुत करता है
बैंक ऑफ़ बड़ौदा
Bank of Baroda
विजया VIJAYA
देना DENA
HAPPY LIFE FESTIVAL
इस फेस्टिव सीजन मनाएं,
ड्रीम होम वाला फेस्टिवल.
बड़ौदा होम लोन
आकर्षक ब्याज दर
सरल दस्तावेजीकरण
मौजूदा होम लोन का आसान टेकओवर
Sindhu's Dream Home
*नियम व शर्तें लागू
मिस्ड कॉल दीजिए* : होम लोन – 846 700 1111
www.bankofbaroda.in
हमें फ़ॉलो करें यहां:
अधिक जानकारी के लिए स्कैन करें

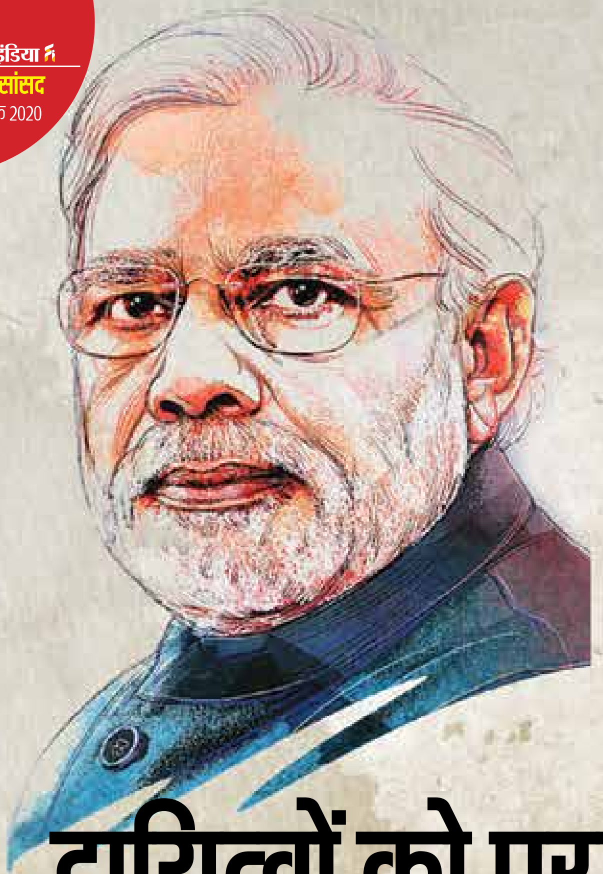

दायित्वों को पूरा करके ही अधिकारों की रक्षा संभव - नरेंद्र मोदी

संविधान 72 वर्षों का हो गया है और इसने हमारे लिए खुशी, उत्कृष्टता और निष्कर्ष की मिश्रित भावना लाने का कार्य किया है। यह खुशी इस तथ्य के लिये है कि संविधान की भावना दृढ़ और अडिग रही है। भले ही इस तरह के प्रयास कभी भी हुए हों, लेकिन देशवासियों ने उन प्रयासों को एक साथ नाकाम कर दिया है। संविधान को कभी नुकसान नहीं पहुंचाया गया है। हमने अपने संविधान की ताकत के कारण निश्चित रूप से उत्कृष्टता दर्ज की है और हम एक भारत श्रेष्ठ भारत की ओर अग्रसर हुए हैं। हमने संविधान के दायरे में कई सुधार लाये हैं और निष्कर्ष यह है कि संविधान इस विशाल और विविध भारत की प्रगति के लिए एक ही रास्ता है, नये भविष्य के लिये, नये भारत के लिये। यह एकमात्र तरीका है जिससे संविधान की भावना बरकरार है। हमारा संविधान हमारे लिये सबसे बड़ा और सबसे पवित्र ग्रंथ है। यह एक ऐसी पुस्तक है जिसमें हमारे जीवन, हमारे समाज, हमारी परंपराओं, हमारी मान्यताओं, हमारे व्यवहार और हमारे लोकाचार शामिल हैं ! साथ ही कई चुनौतियों के समाधान भी हैं। हमारा संविधान इतना व्यापक है क्योंकि इसने बाहर की रोशनी के लिए अपनी खिड़कियां खुली रखी हैं। और इसके अलावा, अंदर की रोशनी को अधिक उज्ज्वल रूप से प्रज्वलित करने का अवसर भी दिया गया है।

मैं 2014 में लाल किले की प्राचीर से कही गयी एक बात को दोहराऊंगा। अगर मैं संविधान का दो सरल शब्दों में वर्णन करना चाहता हूं, तो वह होगा - भारत के लिए सम्मान और भारत के लिए एकता। हमारे संविधान द्वारा इन दोनों मंत्रों को पूरा किया गया है, जिससे नागरिकों की गरिमा सर्वोच्च रहे और संपूर्ण भारत की एकता और अखंडता अक्षुण्ण रहे। हमारा संविधान वैश्विक लोकतंत्र का अंतिम उदाहरण है। यह न केवल हमें हमारे अधिकारों के बारे में बताता है बल्कि हमें अपने कर्तव्यों के बारे में भी जागरूक करता है। एक तरह से, हमारा संविधान दुनिया में सबसे ज्यादा धर्मनिरपेक्ष है। हमें क्या करना है, हम कितना बड़ा सपना देख सकते हैं और हम कहां पहुंचना चाहते हैं, इसकी कोई सीमा नहीं है। संविधान स्वयं अधिकारों की बात करता है और संविधान में स्वयं कर्तव्यों के पालन की अपेक्षा शामिल है। क्या हम एक व्यक्ति के रूप में, एक परिवार के रूप में, एक समाज के रूप में, हमारे संविधान के रूप में हमारे कर्तव्यों के प्रति गंभीर हैं, हमारा देश और हमारे देशवासी हमसे उम्मीद करते हैं। जैसा कि राजेन्द्र बाबू जी ने कहा है कि संविधान में जो नहीं लिखा गया है, उसे हमें सम्मेलन द्वारा स्थापित करना होगा और यही भारत की विशेषता भी है। पिछले दशकों में, हमने अपने अधिकारों पर जोर दिया और यह आवश्यक और अनिवार्य था क्योंकि समाज में ऐसी व्यवस्थाएं बनाई गई थीं जिसके कारण एक बड़े वर्ग को उनके अधिकारों से वंचित कर दिया गया था। अधिकारों को प्रस्तुत किए बिना, इस बड़े वर्ग को समानता और न्याय के महत्व का एहसास कराना संभव नहीं था। लेकिन आज, समय की आवश्यकता यह है कि हम नागरिक के रूप में अपने अधिकारों का पालन करने के अलावा अपने कर्तव्यों और जिम्मेदारियों का पालन करें; क्योंकि अपने दायित्व को पूरा किए बिना, हम अपने अधिकारों की रक्षा नहीं कर सकते।

SriSri™
TATTVA

shuddhta ka naam

350+ शुद्ध, आयुर्वेदिक और ऑर्गेनिक उत्पाद आपके नज़दीकी दुकानों में उपलब्ध हैं!

फ़ूड * पर्सनल केयर * हेल्थ केयर * अगरबत्ती और फ्रेग्रेन्स (खुशबुओं) की रेंज * होम केयर

1800-120-8030 | SriSriTattva

POWERFUL. AGILE. INTELLIGENT.
THE ALL-NEW BMW 5 SERIES. BUSINESS ATHLETE.
M BB4102
BMW
Sheer Driving Pleasure